वर्ष 6, अंक 118 | भोपाल, रविवार 9 नवंबर, 2025 | मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष, चतुर्थी, 2082 | मूल्य 2 रुपए

दैनिक कारखाने का सफर

मध्य प्रदेश के मेलों का इतिहास काफी पुराना, सबसे बड़े मेलो में शामिल हुआ भोपाल का भोजपाल महोत्सव मेला

- भेल के दशहरा मैदान पर 49 दिन तक लगने वाला यह मेला भोपाल के लिए गौरव की बात है
- ग्वालियर, उज्जैन सहित भोपाल के भोजपाल महोत्सव मेले को देखने के लिए लोग बाहर से आते हैं
- उज्जैन के कुंभ मेले की शुरुआत 18वीं शताब्दी में मराठा राजा राणोजी शिंदे के समय में हुई थी, जबकि शिवपुरी में 'पीर बुधन का मेला' जैसे कुछ मेले 250 साल से भी पुराने हैं

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्य प्रदेश में मेलों का इतिहास प्राचीन काल से चला आ रहा है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक और आदिवासी परंपराओं से जुड़ा है। उज्जैन के कुंभ मेले की शुरुआत 18वीं शताब्दी में मराठा राजा राणोजी शिंदे के समय में हुई थी, जबकि शिवपुरी में 'पीर बुधन का मेला' जैसे कुछ मेले 250 साल से भी पुराने हैं। यह क्षेत्र कई प्रकार के मेलों की मेजबानी करता है, जैसे कि भोपाल का 'आलमी तबलीगी इज्तिमा' और गुना का 'हीरा भूमिया मेला'। इसी के साथ अब भेल दशहरा मैदान पर हर साल लगने वाला भोजपाल महोत्सव मेला भी इसमें शामिल हो गया है। भोजपाल महोत्सव मेला इस साल 14 नवंबर से शुरू होने जा रहा है। मेले में दर्शकों के मनोरंजन के लिए कई खास आकर्षण जोड़े गए हैं। राजधानी के भेल दशहरा मैदान पर शुरू हो रहे प्रदेश के सबसे बड़े भोजपाल महोत्सव मेले में शहरवासियों को इस बार बहुत कुछ नया देखने को मिलेगा। एक ओर जादूगर प्रिंस अपनी जादुई करतब दिखाएंगे तो दूसरी ओर बाबा अमरनाथ मेले में आने वाले लोगों को दर्शन देंगे। इसके लिए मेला परिसर में भव्य झांकी तैयार की जाएगी। पारंपरिक झूले, फूड स्टॉल और सांस्कृतिक कार्यक्रम मेले की शान बढ़ाएंगे। 14 नवंबर को भव्य उद्घाटन के साथ यह महोत्सव शुरू होगा।

मेले में होगा जादू, भक्ति का संगम : इस बार भोजपाल महोत्सव मेले में डंकी शो और रोबोटिक एनीमल खास होगा। मेले में पहली बार दिखाए जाने वाले यह खास शो, बच्चों के लिए बड़ा आकर्षण होगा। मेला समिति के अध्यक्ष सुनील यादव ने बताया कि इस मेले को प्रदेश का सबसे बड़ा मेला बनाने में यहां के लोगों का योगदान है। प्रदेश के काफी पुराने और बड़े मेलो में भोजपाल महोत्सव मेले का नाम आना यह भोपाल के लिए गौरव की बात है। इस बार मेले में बच्चों और युवाओं के लिए विज्ञान और मनोरंजन का बेहतरीन मिश्रण होगा। वहीं, 'डंकी शो' में हास्य और रोमांच का तडक़ा होगा। उन्होंने बताया कि इन नए शो को जोडऩे का उद्देश्य परिवार के हर सदस्य को कुछ नया देना है।

देश का सबसे बड़ा 'रोलर कोस्टर' : मेले में इस बार रफ्तार की दुनिया के दीवानों के लिए ख़ास इंतज़ाम किए गए हैं! इस साल का मेला रोमांच से भरपूर होगा। इस बार देश का सबसे बड़ा रोलर कोस्टर भोपाल आ रहा है। साथ ही अत्याधुनिक और दिल दहला देने वाले झूले जैसे टॉवर, रेंजर, ऑक्टोपस, और ब्रेक डांस भी मेले का हिस्सा होंगे। ये झूले बच्चों और बड़ों, दोनों को रोमांच की नई ऊंचाई पर ले जाने के लिए तैयार हैं। मेले में सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखा जाएगा, ताकि हर कोई इस रोमांच का सुरक्षित ढंग से मज़ा ले सके।

भेल जनसेवा समिति द्वारा आयोजित भोजपाल महोत्स्व मेला की शुरुआत 14 नवम्बर को शाम सात बजे से भजन संध्या के साथ की जाएगी। अध्यक्ष सुनील यादव ने बताया कि विगत 11 वर्षों से मेले का सफल आयोजन किया जा रहा है। मेले का यह 12वां वर्ष है। 14 नवम्बर से 1 जनवरी तक 49 दिनों तक चलने वाले इस मेले में राजधानी सहित आसपास के क्षेत्रों, जिलों और नगरों से करीब 20 लाख लोग शिरकत करते हैं।

आटोमोबइल से लेकर ऑर्ट गैलरी, इंटीरियर तक होंगी दुकानें : भोजपाल महोत्सव मेला में ऑटोमोबाइल, इलेक्टॉनिक, टेलीकॉम, फर्नीचर, हैन्डी क्रॉफ्ट, हैन्डलूम, महासेल, विभिन्न प्रकार के स्वादिस्ट व्यंजन, बैंकिंग इंश्योरेंस, ऑर्ट गैलरी, इंटीरियर, महिलाओं की सौंदर्य सामग्री, खूर्जा क्राकरी, कपड़े सहित विभिन्न प्रकार की दुकानें होंगी।

सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक आयोजन का संगम है मेला : यह मेला सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक आयोजन का पारिवारिक संगम है। मेले में रंगारंग सांस्कृति आयोजनों में सूफी नाइट, रॉक बैंड, विभिन्न प्रदेशों के लोकनृत्य, कल्चरल प्रोग्राम के साथ भोजपुरी और बॉलीबुड कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगे। मेले में केंद्र और राज्य सरकार की प्रदर्शनी लगाई जाएगी।

प्रमुख ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलू :

धार्मिक महत्व: मध्य प्रदेश में कई धार्मिक मेले आयोजित होते हैं, जिनमें कुंभ मेले जैसे पवित्र और प्राचीन आयोजन शामिल हैं।

ऐतिहासिक जड़ें: कुछ मेले 18वीं या 19वीं शताब्दी जैसे ऐतिहासिक समय से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए, उज्जैन के कुंभ मेले की शुरुआत मराठा काल में हुई थी, जबकि कई अन्य मेलों की परंपराएं सदियों पुरानी हैं।

सांस्कृतिक विविधताः यहाँ के मेले धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं की विविधता को दर्शाते हैं।

- 'पीर बुधन का मेला' जैसे मेले 250 से अधिक वर्षों से आयोजित किए जा रहे हैं।
- दतिया में 'रामलीला का मेला' 100 से अधिक वर्षों से मनाया जाता है।
- नागाजी का मेला' और 'तेताजी का मेला' भी प्रदेश के कुछ प्रसिद्ध मेले हैं, जिनका लंबा इतिहास है।
- आदिवासी परंपराएंः कई मेले आदिवासी संस्कृति और परंपराओं का हिस्सा हैं, जैसे कि 'जागेश्वरी देवी का मेला'।

अन्य प्रमुख मेलेः

- आलमी तबलीगी इज्तिमा (भोपाल): यह दुनिया भर के मुसलमानों को आकर्षित करता है और इसका भी एक महत्वपूर्ण इतिहास है।
- भूतेश्वर मेला (बैतूल): यह 400 साल पुराना मेला है और इसे दुनिया के सबसे पुराने मेलों में से एक माना जाता है।
- नवग्रह मेला (खरगोन): 1957-58 से खरगोन नगर पालिका द्वारा आयोजित किया जा रहा है।
- नंदचंद मेला (पन्ना): यह भगवान नंदचंद की पूजा को समर्पित एक सांस्कृतिक आयोजन है।

समाचार संपादक की कलम से

–राहुल कौशिक

क्या जनता केवल वोट बैंक बनकर रह गई है? — लोकतंत्र के बदलते स्वरूप पर एक सच्चा प्रश्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है — जहाँ सत्ता का उद्गम जनता है। फिर भी आज सवाल बार-बार उठता हैः क्या जनता अपनी ही मर्जी, अपनी ही बेहतरी के लिए वोट कर रही है या सिर्फ नेताओं की सत्ता-योजना का हिस्सा बनकर रह गई है?

राजनीति कभी सेवा का माध्यम थी; अब वह अक्सर स्वार्थ और सत्ता-विनिमय का खेल बनती जा रही है। विचारधारा और नीतियों की जगह समीकरण, इफ्तार और प्रचार ने ले ली है। इन हालातों में नीतियाँ बनती हैं लेकिन उन तक जनता का वास्तविक लाभ पहुँचने से पहले उनका स्वरूप बदल जाता है।

जो सबसे चिंताजनक बदलाव हमें दिखता है, वह है नेताओं और जनता के बीच की बढ़ती दूरी। चुनाव के समय हर गली-मोहल्ले में वादे किए जाते हैं; पर जीत के बाद वही नेता जनता से दूर हो जाते हैं। साहचर्य की जगह शोभायात्रा, संवाद की जगह प्रचार का वर्चस्व बढ़ता है। और जनता धीरे-धीरे सवाल पूछना छोड़ देती है — इसी चुप्पी का राजनीतिक उपयोग होता है।

इसके साथ एक और व्यथा है — कुछ ऐसी नौकरीपेशा और प्रतिष्ठित पदों पर बैठे लोग जिनका व्यवहार नागरिकों के साथ अहंकारी और असंवेदनशील हो गया है। वे अक्सर स्वयं को विशेष दर्जे पर रखकर जनता की परेशानी नहीं देखते; वे ट्रैफ़िक नियमों का हवाला देते हुए VIP सुविधाओं का उपयोग करते हैं, लाल बत्ती के साथ आवागमन करते हैं, और उसी व्यवस्था की असुविधा महसूस नहीं करते जो आम नागरिक झेलते हैं। जब तक वही व्यक्ति सामान्य ट्रैफ़िक-लाइनों का हिस्सा नहीं बनता, उसे वास्तविक समस्या का आभास नहीं होता — पर असली नेता वह है जो भीड़ के बीच रहकर समाधान देखता और सुनता है, न कि अपनी अलग सुरक्षा में बैठकर।

और फिर वे नेतागण हैं जो सत्ता के आभाव का लाभ उठाकर सार्वजनिक धन और संसाधनों से ऐसा लाभ उठाते हैं, जिससे साधारण नागरिक का भला नहीं होता। योजना-विकास का ढांचा बनता है, पर अमल में लूट-घोटाला और पारदर्शिता की कमी के कारण समाज के कमजोर तबकों तक अधिकार पहुँचने में विफलता रहती है। यह केवल सत्ता की कमजोरी नहीं — यह स्वार्थ की नैतिक विफलता है।

पर दोष केवल सत्ता का नहीं है। अगर जनता भावनाओं या सांप्रदायिक/जातीय समीकरणों के आधार पर बार-बार वोट देती रहे, तो परिवर्तन की संभावना कम ही रहती है। लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब जनता अपने मत को केवल अधिकार न समझे, बल्कि जिम्मेदारी भी माने — फैसलों पर नजर रखे, वादे याद दिलाये और जवाबदेही माँगे। समाधान का मार्ग सरल है पर कठिनः पारदर्शिता, जिम्मेदारी और सक्रिय नागरिकता। नेताओं का आचरण बदलने का सबसे प्रभावी तरीका यही है कि जनता रोज़मर्रा के फैसलों पर सचेत होकर दबाव बनाए — न केवल चुनाव के समय बल्कि पूरे कार्यकाल में। स्थानीय स्तर पर सवाल पूछें; रिकॉर्ड माँगें; जो गड़बड़ है उसकी रिपोर्ट करें; और सही काम करने वालों का साथ दें।

यदि हम सचमुच चाहते हैं कि लोकतंत्र जिंदा रहे, तो हमें यह समझना होगा कि सत्ता जनता की सेवा के लिए है — न कि जनता सत्ता की सेवा के लिए। जब जनता चुप होकर सिर्फ तालियाँ और समर्थन देगी, तभी राजनीति केवल दिखावा बनकर रह जाएगी। वास्तविक बदलाव तब आएगा जब जनता निर्भीक होकर, तटस्थ होकर और निरपेक्ष हित को प्राथमिकता देकर आवाज़ उठाएगी।

नेताओं की परख जनता के सतर्क-निगरानी से होती है — चुप्पी नहीं, सतत् सवाल लोकतंत्र को बचाते हैं।

भेल उपभोक्ता सहकारी भंडार का विजय मार्केट बरखेड़ा में बंद कॉफी हाउस किसकी अनुमति से फिर खोल दिया

श्रृंखला- 6

- जिस व्यक्ति ने एफआईआर दर्ज करवाई, उसे ही कॉफी हाउस चलाने की जिम्मेदारी दी
- भंडार के अध्यक्ष पिछले पांच साल से अपने हित के काम करते रहे और किसी ने ध्यान नहीं दिया
- पहले भी कई गड़बड़ियां हुईं जब दो बाहरी व्यक्ति बिना चुनाव लड़े संचालक बनकर काम करते रहे

दैनिक कारखाने क सफर । भोपाल

एक समय था जब बीएचईएल का नाम राजधानी के किसी भी कौने में लेने पर व्यक्ति के चेहरे पर सम्मान कर झलक देने लगती थी। भेल टाउनशिप और कारखाने में भी भेल में चल रहीं सहकारी समितियों को विश्वास और सम्मान के साथ देखा जाता था। यह माहौल काफी समय तक रहा, लेकिन इस समय हाल यह हो गया कि सहकारी समिति के बारे में चर्चा करो तो भेल कर्मचारी ही मजाक बना देते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है कि इन समितियों की कारगुजारियों को सुनकर भेल कर्मचारी ही निराश हो चुके हैं। किसी सोसायटी में आपसी घमासान तो किसी में लूटमार की स्थिति सुनाई दे रही है। इसी तरह की एक समिति भेल उपभोक्ता सहकारी भंडार वैसे तो कर्मचारियों के लिए कोई लाभ देने वाली समिति नहीं रही, लेकिन रिटायर्ड और कुछ वर्तमान कर्मचारी और अधिकारी इससे जुड़े रहे। इस समिति से सीधा जुड़ाव सिर्फ गैस एजेंसी से ही रहा, लेकिन धीरे-धीरे वर्तमान कर्मचारी भी उससे दूर हो गए। इस समय इस समिति के संचालकों ने तो दूरी बना ली और कोई किसी भी गतिविधि में भाग भी नहीं ले रहा। क्योंकि भेल उपभोक्ता सहकारी भंडार के भवन में ताला भी लग गया है। इसके बाद भी विजय मार्केट बरखेड़ा स्थिति सहकारी भंडार का कॉफी हाउस फिर खुल गया। इस संबंध में संचालकों से संपर्क किया गया तो उनका कहना था कि अब किसी भी संचालक को वहां से कोई लेना देना नहीं है। फिर यह कॉफी हाउस एक बाहरी व्यक्ति ने कैसे खोल लिया। जिस व्यक्ति ने यह कॉफी हाउस खोला है, उसका पिछले कई साल से अध्यक्ष पद संभालने वाले एक अधिकारी जो अब रिटायर्ड हो चुके हैं से झगड़ा हो गया था। वैसे अध्यक्ष ने बिना अनुमति के कॉफी हाउस में पार्टनरशिप उस व्यक्ति से कर ली थी, जिसने अभी हाल ही में दोबारा कॉफी हाउस खोल लिया। आपसी झगड़े के कारण कॉफी हाउस बंद हुआ और इसको लेकर बाहरी व्यक्ति ने एफआईआर दर्ज करा दी थी। संचालकों के अनुसार उपभोक्ता सहकारी भंडार का संचालन कर रहे थे, लेकिन अभी कोई वहां जा ही नहीं रहा, तो कॉफी हाउस खोलने की अनुमति कैस दी गई। यानि भेल की प्रोपर्टी पर कोई भी आकर कब्जा कर ले, उसे देखने वाला अब कोई नहीं है। इस तरफ प्रबंधन को ध्यान देना चाहिए।

दीपावली मिलन समारोह के साथ ही "स्टेट बैंक साहित्य एवं कला परिषद् भोपाल" संस्था का गठन हुआ

गोकुल सोनी बने संस्था के संस्थापक सदस्य एवम संरक्षक बने सर्वश्री राजेश जोशी, सुरेश पटवा एवम आलोक त्यागी

दैनिक कारखाने क सफर । भोपाल

दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के सभागार में "स्टेट बैंक साहित्य एवं कला परिषद् भोपाल" द्वारा दीपावली मिलन समारोह आयोजित किया गया। अध्यक्षता साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध कवि श्री राजेश जोशी ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार सुरेश पटवा, सारस्वत अतिथि वरिष्ठ कवि,वरिष्ठ साहित्यकार, व्यंग्यकार गोकुल सोनी एवं प्रबुद्ध बैंकर हेमंत मुक्तिबोध रहे। कार्यक्रम के प्रारंभ में अन्विता भारद्वाज द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई, तत्पश्चात दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय की सचिव करुणा राजुरकर ने दीपावली गीत की सुंदर प्रस्तुति दी और स्वागत भाषण मनोज गुप्त द्वारा दिया गया।

इस अवसर पर सुरेश पटवा के कविता संग्रह "संवेदना" और आलोक सक्सेना का काव्य संग्रह "दिल से दिल" तक का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध हिन्दी कवि गजलकार दुष्यंत कुमार जी के सुपुत्र साहित्यकार आलोक त्यागी भी मंच पर उपस्थित रहे।

गोकुल सोनी ने अपनी गीत "वक्त के साथ तुमने जो बदला है रंग, मैं बदल जाऊं इतना, ये मुमकिन नहीं, वास्ते स्वार्थ के छोडूं अपनों का संग, मैं बहक जाऊं इतना ये मुमकिन नहीं।" सुनाकर सभी को भावविभोर कर दिया। वरिष्ठ साहित्यकार और मुख्य अतिथि सुरेश पटवा ने अपनी कविता के माध्यम से अपने बैंकिंग कार्यकाल की यादों को ताजा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ कवि राजेश जोशी ने अपने उद्बोधन में स्टेट बैंक साहित्य एवं कला परिषद् के सुखद भविष्य की कामना करते हुए आवारा कुत्तों की आवारागिरी और जमावाड़े की त्रासदी को अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन जयंत भारद्वाज ने किया।

दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के अध्यक्ष रामराव वामनकर ने "लिखो विजय प्रकाश की, विनाश अंधकार का, पर्व है ये जीत के दीपों के दुलार का" से दीपावली पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस दीपावली मिलन समारोह में रंगारंग कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें जयंत भारद्वाज ने सफल संचालन के साथ कामेडी प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। व्यंग्यकार यशवंत गोरे ने अपने व्यंग्य "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें बीमारी बताउंगा" ने सभी को गुदगुदाया। कवि मनमोहन चौरे ने "उजाले जब मुस्कुरायेंगे, अँधेरे मातम मनायेंगे, और "जब निकलेगा दिल से, साथ सारे गुनगुनायेंगे", आलोक सक्सेना ने "यह सच है, नहीँ थे तेरे काबिल, कि तेरे दीवानो में नहीं थे शामिल", कैलाश मेश्राम ने "दोषी ख़ुद ही कर रहा जुर्म की तफ़तीश है, सच खड़ा है कटघरे में, झूठ न्यायाधीश है", लक्ष्मीकांत जवणे ने "हम लोकतंत्र के आराधक कैलाश जगाने निकले हैं", अनिल चौबे ने "एक समय मेरा नाम मुझे अकेला छोड़ दूर जा खड़ा हुआ, कभी लोग मुझे तो कभी नाम निहारे फिर नाम का सहारा लेकर मुझे पुकारे", उमाशंकर खरया ने "चेहरे के दोहरे भाव से, छल-पाखंड के व्यवहार से", डॉ.संगीता भारद्वाज " मैत्री" ने "दीपावली पर्व शुभकामना गीत, जगमग है दीप आज हर्षित परिवेश", दीपक पंडित ने "मैं नदी हूँ एक शापित सी नदी, त्रासदी ही मेरी किस्मत में लिखी", मनोज गुप्ता ने "अन्तर्मन क्या खोज रहा है, पीड़ा नहीं समझ पाई, आवेगों से भर्राए स्वर, बात न मन की कह पाई।।", मंजू पटवा ने "जिस घर में मां तू होती है, कदम तले जन्नत होती है।" आलोक त्यागी ने "लव ना सीना जब जहन में शोर होते हैं, रफ्ता रफ्ता आप यू कमजोर होते हैं।", बिपिन बिहारी वाजपेई ने "यूं तो सभी कभी अकेले में या समूह में भी चांद तारे आकाश अंतरिक्ष से बातें करने है। मैं प्रायः सूर्य से बात करने का प्रयास करता हूं", एम.बी. सिंघल ने "चांद को जमीन पर लाने का ख्वाब देखा है मगर डरता हूं चांद ज़मीं जैसा ना हो जाए", कार्यक्रम के द्वितीय भाग मे स्टेट बैंक साहित्य एवं कला परिषद् भोपाल" नाम नवीन संस्था का गठन किया गया जो भारतीय स्टेट बैंक के सेवानिवृत्त कर्मियों की संस्था होगी एवम अन्य साहित्यिक संस्थाओं से तालमेल के साथ कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

सर्वसम्मति से नवनिर्मित संस्था के अध्यक्ष पद के लिए वरिष्ठ साहित्यकार गोकुल सोनी एवम संरक्षक मंडल के लिए सुरेश पटवा, राजेश जोशी एवम आलोक त्यागी का नाम प्रस्तावित किया गया जिसका सभी उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में अरुण गुप्ता ने सभी उपस्थित जनों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यकार बांधों ने अपनी उपस्थिति दी।

पाक के फंडिंग-नेटवर्क पर कुलगाम पुलिस की स्ट्राइक, अलगाववादी नेताओं के गठजोड़ पर कसा शिकंजा

दैनिक कारखाने क सफर । एजेंसी नई दिल्ली

सुरक्षा बलों ने जम्मू-कश्मीर के कुलगाम ज़िले में एक व्यापक आतंकवाद-रोधी अभियान शुरू किया है और कथित तौर पर पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) से सक्रिय आतंकवादियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर कार्रवाई शुरू की है। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षा बलों को खुफिया जानकारी मिलने के बाद ज़िले के कई हिस्सों में कई घेराबंदी और तलाशी अभियान (CASO) चलाए गए। उन्होंने बताया कि यह अभियान "सीमा पार अपने रिश्तेदारों के इशारे पर आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने, उन्हें धन मुहैया कराने और उन्हें बढ़ावा देने में शामिल लोगों" के खिलाफ था। अधिकारियों ने बताया कि कार्रवाई के दौरान, उन्होंने कई लोगों पर देश-विरोधी गतिविधियों में शामिल रहने, जिनमें रसद सहायता, दुष्प्रचार और भर्ती में सहायता शामिल है के लिए संबंधित कानूनी प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया है। उन्होंने कई डिजिटल उपकरण और आपत्तिजनक सामग्री भी ज़ब्त की है। अधिकारियों ने एक बयान में कहा, "कुलगाम पुलिस ने ज़िले में शांति और सुरक्षा बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है और कहा है कि आतंकी समर्थन नेटवर्क के खिलाफ अभियान जारी रहेगा ताकि इसे पूरी तरह से ध्वस्त किया जा सके।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय
गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

इज्तिमा को लेकर भोपाल जमीयत उलमा की प्रशासन से अपील

जल्द ठीक की जाएं खराब सड़कें, रेलवे से भी एक्स्ट्रा कोच लगाने की मांग

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आगामी तब्लीगी इज्तिमा को देखते हुए भोपाल जमीयत उलमा मध्यप्रदेश के मीडिया प्रभारी हाजी मोहम्मद इमरान हारून ने नगर निगम और रेलवे प्रशासन से कई अहम मांगें की हैं। उन्होंने कहा कि इज्तिमा शुरू होने से पहले पुराने शहर की जर्जर सड़कों को दुरुस्त किया जाए और ट्रैफिक व्यवस्था को बेहतर बनाया जाए, ताकि देशभर से आने वाले लाखों जायरीन को किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।
हाजी इमरान ने बताया कि पुराने भोपाल की अधिकांश सड़कें और गलियां बदहाल स्थिति में हैं, जगह-जगह गड्ढे हैं और कई इलाकों में स्ट्रीट लाइटें भी खराब हैं। उन्होंने नगर निगम से मांग की कि इज्तिमा स्थल तक जाने वाले मुख्य मार्गों के साथ-साथ अंदरूनी सड़कों का भी डामरीकरण और पेज वर्क किया जाए, ताकि यातायात सुगम रहे। जमीयत उलमा मध्यप्रदेश ने नगर निगम और रेलवे प्रशासन से कई अहम मांगें की हैं।
हाजी मोहम्मद इमरान ने भोपाल रेल मंडल डीआरएम से भी आग्रह किया कि इज्तिमा के दौरान बढ़ने वाली यात्रियों की संख्या को देखते हुए सभी प्रमुख रूटों की ट्रेनों में स्पेशल कोच लगाए जाएं। साथ ही स्टेशनों पर अतिरिक्त आरक्षित और अनारक्षित टिकट काउंटर की व्यवस्था की जाए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि यदि संभव हो तो स्टेशन के बाहर अस्थायी टिकट काउंटर बनाए जाएं, ताकि यात्रियों को भीड़ और लंबी लाइनों से राहत मिल सके।
हाजी मोहम्मद इमरान ने विशेष रूप से बुधवारा, भारत टॉकीज, जहांगीराबाद, रॉयल मार्केट, पीरगेट, मोती मस्जिद, शाहजहांनाबाद, इब्राहिमपुरा और स्टेट बैंक चौराहा जैसे इलाकों की अंदरूनी गलियों को भी तत्काल सुधारने की मांग की है। उन्होंने कहा कि ये इलाके इज्तिमा में आने वाले मेहमानों की आवाजाही के मुख्य मार्ग हैं, इसलिए इनकी सड़कों को बेहतर स्थिति में लाना बेहद जरूरी है।

हिंदू उत्सव समिति ने फिल्म 'हक' का किया समर्थन, कहा- तीन तलाक की सच्चाई दिखाती है ये फिल्म, शाहबानो केस से प्रेरित कहानी

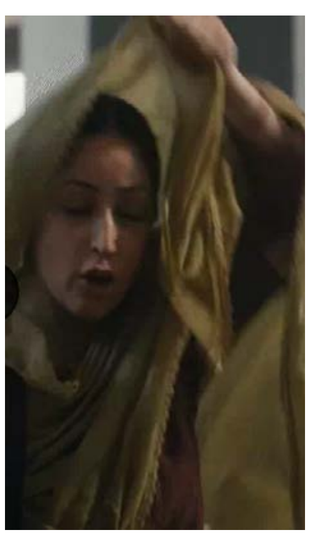

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

इमरान हाशमी और यामी गौतम स्टारर फिल्म 'हक' को लेकर जारी विवाद के बीच अब हिंदू उत्सव समिति भी फिल्म के समर्थन में आ गई है। समिति के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने कहा कि यह फिल्म समाज के सामने सच्चाई दिखाने वाली है। इसमें शाहबानो प्रकरण के माध्यम से यह बताया गया है कि तीन तलाक की व्यवस्था ने मुस्लिम महिलाओं को किस तरह से पीड़ा दी और उनके अधिकारों को छीना। तिवारी ने कहा "देखिए, फिल्म 'हक' में शाहबानो प्रकरण को जिस रूप में दिखाया गया है, वह ऐतिहासिक घटना है। उस समय राजीव गांधी सरकार ने संसद में विधेयक लाकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलट दिया था। फिल्म में यह दिखाया गया है कि तीन तलाक देकर पति ने किस प्रकार से अपनी पत्नी को प्रताड़ित किया। हिंदू उत्सव समिति और संस्कृति बचाओ मंच मुस्लिम महिलाओं से अपील करते हैं कि वे इस फिल्म को जरूर देखें और समझें कि किस प्रकार तीन तलाक और हलाला जैसी प्रक्रिया उन्हें अपमानित करती रही है।
चंद्रशेखर तिवारी ने कहा कि सनातन धर्म में विवाह सात जन्मों का बंधन माना गया है, जबकि फिल्म में दिखाई गई स्थिति यह बताती है कि वहां स्त्री को मात्र भोग की वस्तु समझा गया। तिवारी ने कहा कि जब तीन तलाक बिल संसद से पारित हुआ था, तब सिर्फ हिंदू समाज ही नहीं बल्कि देश की मुस्लिम महिलाओं में भी खुशी की लहर दौड़ गई थी, क्योंकि उन्हें लगा कि अब उन्हें भी समान अधिकार और सम्मान मिलेगा।
फिल्म 'हक' को लेकर शाहबानो बेगम की बेटी सिद्दीका बेगम खान ने इंदौर हाईकोर्ट में याचिका दायर कर रिलीज रोकने की मांग की थी, लेकिन मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर बेंच ने याचिका को खारिज करते हुए कहा कि "किसी व्यक्ति का निजता और प्रतिष्ठा का अधिकार उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हो जाता है, वारिस इसे नहीं पा सकते। जस्टिस प्रणय वर्मा ने अपने आदेश में कहा कि जब व्यक्ति जीवित नहीं रहता तो उसकी प्राइवेसी और प्रतिष्ठा का अधिकार भी समाप्त हो जाता है। इसके साथ ही फिल्म की रिलीज पर रोक लगाने से इनकार कर दिया गया। फिल्म निर्माता जंगली पिक्चर्स की ओर से अधिवक्ता अजय बागड़िया और ऋतिक गुप्ता ने कोर्ट में कहा कि 'हक' कोई बायोपिक नहीं है, बल्कि यह अंग्रेजी किताब 'बानोः भारत की बेटी' से प्रेरित एक काल्पनिक कथा है। उन्होंने कहा "फिल्म का उद्देश्य किसी व्यक्ति या समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं है। यह समाज में महिलाओं के अधिकार और सम्मान को लेकर जागरूकता बढ़ाने वाला प्रयास है। फिल्म 'हक', 1985 के चर्चित शाहबानो केस से प्रेरित है। यह वही मामला था जिसने तत्कालीन राजीव गांधी सरकार को धार्मिक दबाव में आकर सुप्रीम कोर्ट का फैसला पलटने और मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक लाने पर मजबूर कर दिया था।

बड़ा बदलावः भोपाल स्टेशन पर सफाई व्यवस्था तीसरी बार बदलेगी, नई विंग बनाई

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल रेलवे स्टेशन पर सफाई व्यवस्था तीसरी बार बदलने जा रही है। लगातार बढ़ती शिकायतों को देखते हुए अब रेलवे ने एनवायर्नमेंट हाउसकीपिंग मैनेजमेंट नाम से नई विंग ही गठित कर दी है, जो स्टेशन से लेकर ट्रेन, यार्ड और रिटायरिंग रूम तक की सफाई की पूरी जिम्मेदारी संभालेगा। मैकेनिकल विभाग के अंतर्गत जूनियर एडमिनिस्ट्रेटिव ग्रेड के अधिकारी के नेतृत्व में यह विंग काम करेगी। भोपाल रेल मंडल में विवेक श्रीवास्तव को कमान सौंपी गई है। सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया के अनुसार, मंडल के बड़े स्टेशनों पर फिर से कर्मचारी बेस्ड सिस्टम लागू होगा। सफाईकर्मियों की संख्या बढ़ाई जाएगी।
पहली व्यवस्था... स्टेशन पर पहले सफाई व्यवस्था कर्मचारी बेस्ड सिस्टम के तहत चलती थी। यानी रेलवे ठेकेदार के माध्यम से तय संख्या में कर्मचारी लगवाता था। औसतन 70 से अधिक सफाईकर्मी 24 घंटे (राउंड द क्लॉक) स्टेशन पर तैनात रहते थे। इससे सफाई अच्छी रहती थी।
दूसरी व्यवस्था... कोरोना महामारी के बाद रेल मंत्रालय ने पॉलिसी में बदलाव किया और कॉन्ट्रेक्ट एजेंसी को यह जिम्मेदारी दी गई कि वह तय रकम में स्टेशन को साफ रखे और कर्मचारियों की संख्या अपने हिसाब से तय करे।
पहले जो कॉन्ट्रैक्ट 1 करोड़ सालाना का था, उसे घटाकर 25 से 30 लाख कर दिया गया। इससे कर्मचारियों की संख्या में एक तिहाई कमी आ गई। सफाई की गुणवत्ता गिर गई।
बदलाव का कारण... भोपाल मंडल में पिछले पांच महीनों में सफाई से संबंधित 12,000 से अधिक शिकायतें दर्ज की गईं हैं। भोपाल स्टेशन पर साल में लगभग 400 शिकायतें आती हैं। फिलहाल सफाई का कार्य स्वास्थ्य, वाणिज्य और इंजीनियरिंग जैसे अलग-अलग विभागों में बंटा हुआ है। इससे समन्वय की कमी और जिम्मेदारी तय करने में कठिनाई आती रही है। नई व्यवस्था में सफाई, ठेकेदारी, निरीक्षण, शिकायतों का समाधान और मॉनिटरिंग का काम एक ही विंग करेगी।

भोपाल में कोलार लाइन से आज पानी की सप्लाई नहीं

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी भोपाल में रविवार को कोलार लाइन से पानी की सप्लाई नहीं होगी। इस वजह से अरेरा कॉलोनी, आरिफ नगर, हमीदिया रोड, शिवाजी नगर, तुलसी नगर समेत 60 से अधिक इलाकों में असर पड़ेगा। जरूरी पड़ने पर नगर निगम पानी के टैंकर भेज सकती है। कोलार जलप्रदाय प्रोजेक्ट को बिजली प्रदाय करने वाले दोनों फीडरों में मेंटेनेंस की वजह से ऐसा होगा। इसके लिए सुबह 10 से शाम 6 बजे तक शटडाउन होगा। इस वजह से पानी की टंकियां नहीं भर सकेगी और सप्लाई व्यवस्था पर असर पड़ेगा। टंकियां भरने के बाद सोमवार को पानी की सप्लाई की जाएगी।
बरखेड़ी कलां, डीआरपी लाइन क्षेत्र, नया शबरी नगर क्षेत्र, नया बसेरा, एजी कॉलोनी, राजीव नगर बस्ती, पंपापुर, शिवाजी नगर, तुलसी नगर, ई-6 अरेरा कॉलोनी क्षेत्र, जनता क्वार्टर, बैंक कॉलोनी, नूपुरकुंज, पारस सिटी, ई-7 अरेरा कॉलोनी, एमआईजी, एलआईजी, वार्ड नंबर-49, अंसल प्रधान, दाना पानी, फॉरच्यून, शालीमार, आरिफ नगर, 6 गलियां, छोटी मस्जिद के पास वाली गलियां।
निशातपुरा, न्यू आरिफ नगर, बाग नुजहत अफ्जा, रेशम केंद्र, राम मंदिर, हमीदिया रोड, छावनी, पटेल नगर, संगम टॉकीज, गुरु बख्श की तलैया, बाल विहार, मेडिकल स्ट्रीट, खजूर वाली गली, शांति नगर, इब्राहिमगंज, कबाड़ खाना, छोला विश्रामघाट, सपना लॉज क्षेत्र, पंजुमल धर्मशाला, चौकसे नगर, रंभानगर, अली अजीज की मस्जिद, काजी कैम्प रोड, इब्राहिमपुरा, मारवाड़ी रोड।
कोतवाली रोड, इलेक्ट्रॉनिक मार्केट, मंगलवारा, इतवारा, आजाद मार्केट, इस्लामपुरा, कंजरपुरा, तलैया थाना, बुधवारा, वहीदिया स्कूल, पठार वाली गली, नूरमहल रोड, बलाईपुरा, बढ़ईपुरा, अमर बस्ती, पायगा नूरमहल, चौकी इमामवाड़ा, हवा महल रोड, शास्त्री नगर, 228 क्वाट्र्स, न्यू, ओल्ड, सुनेहरी बाग क्षेत्र, 12 दफ्तर की झुग्गियां, न्यू एमएलए क्वाट्र्स आदि क्षेत्र।

भोपाल में शातिर चोर गिरफ्तार, 22 लाख की ज्वेलरी और नकदी बरामद

dैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

कोहेफिजा थाना पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए एक शातिर चोर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी से करीब 22 लाख रुपए कीमती सोने-हीरे के गहने, नकदी और एक एक्टिवा स्कूटर बरामद किया है। यह कार्रवाई पुलिस आयुक्त हरिनारायणाचारी मिश्र के निर्देशन और अतिरिक्त पुलिस आयुक्त के मार्गदर्शन में की गई। 29 अक्टूबर को फिजा पैलेस रिगालिया हाइट्स कोहेफिजा निवासी कमाल उद्दीन ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि वह अपने बेटे की शादी के लिए घर पर ताला लगाकर गए थे। इस दौरान अज्ञात चोर घर में घुसकर सोने और हीरे-पन्ने जड़े गहनों समेत लाखों रुपए नगद चोरी कर ले गया। शिकायत पर थाना कोहेफिजा में अपराध क्रमांक 653/2025 धारा 331(4), 305A बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस उपायुक्त जोन-3 अभिनव चौकसे और अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त शालिनी दीक्षित के मार्गदर्शन में सहायक पुलिस आयुक्त शाहजहानाबाद अनिल वाजपेई के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई।टीम ने घटना स्थल और आसपास के इलाकों में लगे करीब 400 से 500 सरकारी और निजी CCTV कैमरों की फुटेज खंगाली। साथ ही सायबर सेल की मदद से तकनीकी डाटा विश्लेषण कर आरोपी की पहचान की गई।
तकनीकी साक्ष्यों और फुटेज के आधार पर पुलिस ने आरोपी फरहान खान (21 वर्ष), निवासी लक्ष्मी टॉकीज के पास, थाना हनुमानगंज को गिरफ्तार किया। पूछताछ में आरोपी ने चोरी की वारदात कबूल की। पुलिस ने उसके कब्जे से चोरी का पूरा सामान बरामद किया। जिसमें पुलिस ने आरोपी से अन्य चोरी के मामलों के संबंध में पूछताछ के लिए रिमांड लिया है।
प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने शहर में कुछ और स्थानों पर चोरी करने की बात भी स्वीकार की है। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी निरीक्षक कृष्ण गोपाल शुक्ला, उनि उपेंद्र नाथ सिंह, उनि सर्वेस सिंह, सउनि अंतराम यादव, प्रआर ज्ञानेन्द्र द्विवेदी, प्रआर सतीष यादव, प्रआर विजेंद्र राजपूत, आर शुभम (सायबर सेल), आर रवि कुमार चौवे, आर रविन्द्र, आर प्रवीण, आर आकाश, आर अलीशान खान और आर मंगलेश की सराहनीय भूमिका रही।

श्वेतांबर जैन साध्वी संघ का चातुर्मास परिवर्तन स्वयं के हृदय को ही तीर्थ बनाओ-साध्वी मोनांग प्रिया श्रीजी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

श्वेतांबर जैन साध्वी मोनांग प्रिया श्री जी सहित सा संघ 6 साध्वीजी का चातुर्मास परिवर्तन हुआ, महावीर गिरी तीर्थ पर भगवान महावीर का अभिषेक नवाणु पूजन श्री सिद्ध भाव यात्रा, विधि विधान से अनुष्ठान हुए, प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया सभी श्री संघ के लोगों श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ के अध्यक्ष राजेश तातेड एवं सभी समिति अध्यक्ष द्वारा सभी जिनालय के सेवा धारियों पुजारी आदि कर्मचारियों का बहुमान किया गया, साध्वी जी ने कहा तीर्थ वंदनीय और पूजनीय होते हैं पर सबसे विशाल और पवित्र तीर्थ अपने हृदय को बनाओ जो अपने पास अपने साथ है हृदय में हमेशा पवित्रता निर्मलता और सात्विकता के साथ रखो, जीवन हमेशा उज्जवल रहेगा

संघ का चातुर्मास परिवर्तन के बाद सुजीत रामपुरिया के निवास पर वंदना के बाद गुरुवर्या ने आष्टा सीहोर की और पद बिहार किया।

कार्यक्रम में विधायक रामेश्वर शर्मा भाजपा महा मंत्री राहुल कोठारी विधायक दीपक सांखला अध्यक्ष राजेश तातेड दीपक भंडारी सुधीर भंडारी डॉ नितीन नाहर सुजीत रामपुरिया विपुल श्री माल अरविंद जैन महेश तातेड, जयंत डागा कपिल झबक सुनील डोसी ललित नाहटा ईश्वर लाल मेहता आदि मौजूद थे।

55 साल के युवा राहुल गांधी सैकड़ों चुनाव हार चुके, अब जिला अध्यक्षों को जीत सिखाने चले हैं : मंत्री सारंग

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

कांग्रेस के जिला अध्यक्षों के पचमढ़ी में चल रहे प्रशिक्षण शिविर को लेकर प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने राहुल गांधी और कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। मंत्री सारंग ने कहा कि, "नकल के लिए अकल की जरूरत होती है, और कांग्रेस को बीजेपी की नकल करने के लिए अकल का इस्तेमाल करना चाहिए।"

राहुल गांधी पर करारा हमला- सारंग ने राहुल गांधी के प्रशिक्षण शिविर में पहुंचने पर कहा, "जो खुद अप्रशिक्षित है, वह दूसरों को प्रशिक्षण दे रहा है। जो स्वयं अनुशासनहीन है, वह अनुशासन सिखाने चला है।" उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस की बड़ी लीडरशिप को सबसे पहले खुद को प्रशिक्षित करने की जरूरत है। "गंगोत्री की शुद्धता से ही गंगा की शुद्धता स्थापित होती है। जब शीर्ष नेतृत्व ही अस्थिर है, तो संगठन कैसे मजबूत होगा।" सारंग ने राहुल गांधी को "राजनीति के लाफ्टर शो का सबसे बड़ा किरदार" बताया और कहा, "55 साल के युवा राहुल गांधी सैकड़ों चुनाव हारने का रिकॉर्ड बना चुके हैं। अब वो दूसरों को जीतना सिखाने चले हैं, यह खुद में एक बड़ा लाफ्टर शो है।"

चुनाव आयोग पर कांग्रेस के आरोपों का जवाब

कांग्रेस द्वारा ईवीएम और चुनाव आयोग पर उठाए गए सवालों पर मंत्री सारंग ने कहा, "कांग्रेस हर समय संवैधानिक संस्थाओं पर प्रश्न चिन्ह लगाकर जनता को गुमराह करती है। चुनाव आयोग निष्पक्षता से काम कर रहा है। राहुल गांधी और उनके नेता पिछले 6-8 महीनों से सिर्फ प्रोपेगेंडा चला रहे हैं।" उन्होंने कहा, "कांग्रेस ने न तो चुनाव आयोग में शिकायत की, न ही कोर्ट में गई। राहुल गांधी तथ्यहीन बातें करके मीडिया के माध्यम से जनता को गुमराह कर रहे हैं।"

"वोट चोरी की शुरुआत नेहरू ने की थी"

सारंग ने कहा, "राहुल गांधी अपनी संभावित हार से बचने के लिए फेस सेविंग करना चाहते हैं। मीडिया में जाकर सेंसेशनल न्यूज़ बनाना राजनीति नहीं है। अब तो राहुल गांधी इंटरनेशनल मॉडल का सहारा लेकर प्रोपेगेंडा करना चाह रहे हैं।" उन्होंने यह भी कहा, "वोट चोरी की शुरुआत उनके पूर्वज नेहरू जी ने ही की थी। नेहरू ने वोट चोरी करके पीछे के दरवाजे से सत्ता हासिल की थी। चुनाव आयोग को बदनाम करना कांग्रेस की हारी हुई मानसिकता का परिचय है।

भोपाल नगर निगम में सफाई कर्मचारियों की आधी सैलरी देना अन्याय पूर्ण

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

श्रमिक नेता दीपक गुप्ता ने बताया कि भोपाल नगर निगम में सफाई कर्मचारियों के खाते में आधी सैलरी दी गई है इस निर्णय की हम कड़ी निंदा करते हैं। यह निर्णय न केवल गलत है, बल्कि यह सफाई कर्मचारियों के साथ अन्याय भी है। सफाई कर्मचारी पूर सैलरी भुगतान को लेकर आज सुबह हड़ताल पर चले गए है। श्रमिक कांग्रेस नेता दीपक गुप्ता ने सफाई कर्मियों की मांगों को सही एवं जायज ठहराते हुए कहा कि यदि जल्द ही पूरे वेतन का भुगतान नहीं किया गया तो जोरदार आंदोलन किया जाएगा जिसकी जवाबदारी प्रशाशन की होगी।

पूर्व राष्ट्रपति कोविंद ने किया अखिल भारतीय साहित्य परिषद के अधिवेशन का शुभारंभ

साहित्य से आर्थिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक चेतना मिलती है - पूर्व राष्ट्रपति

- **विन्ध्य ने हमें सफेद बाघ और थल तथा नौसेना अध्यक्ष का गौरव दिया है - कोविंद**
- **साहित्य परिषद अधिवेशन के विचार मंथन का अमृत देश को दिशा देगा - उप मुख्यमंत्री**

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

अखिल भारतीय साहित्य परिषद के 17वें अधिवेशन का शुभारंभ पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने किया। रीवा के कृष्णा राज कपूर आडिटोरियम में आयोजित समारोह में पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि विन्ध्य साहित्य और संगीत के साधकों की भूमि है। यह बीरबल और तानसेन जैसे व्यक्तियों की जन्मभूमि है। विन्ध्य सफेद बाघ के लिए पूरी दुनिया में विख्यात है। विन्ध्य ने हमें सफेद बाघ ही नहीं वर्तमान में थल सेना अध्यक्ष उपेन्द्र द्विवेदी और नौ सेना अध्यक्ष एडमिरल दिनेश त्रिपाठी दिए हैं। यह विन्ध्य ही नहीं पूरे देश के लिए बहुत बड़ा गौरव है। अखिल भारतीय साहित्य परिषद के तीन दिवसीय अधिवेशन ने देश भर के साहित्यकारों और विद्वानों को इस पावन भूमि के सानिध्य का अवसर दिया है। अधिवेशन का मूल वाक्य आत्मबोध से विश्वबोध है। अपने आपको जब हम ठीक से जानकर सच्चे अर्थों में आत्मबोध कर लेंगे तभी हमें विश्व का बोध होगा।

पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि जो स्वयं को जान लेता है वही विश्व कल्याण कर सकता है। जब आत्मबोध और आत्मशक्ति क्षीण होने लगती है तब हम पराभव की ओर जाते हैं। ऐसे में राष्ट्र गुलामी की जंजीरों में जकड़ जाता है। देश में सदियों की पराधीनता में भी साहित्य ने बौद्धिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों का दीप जलाए रखा। स्वाधीनता संग्राम में साहित्य और साहित्यकारों का अतुलनीय योगदान है। स्वाधीनता के बाद देश में विकास की चेतना के लिए भी साहित्य सशक्त माध्यम बना। साहित्य से ही हमें आर्थिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक चेतना मिलती है। इन्हें साहित्य ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ले जाता है।

समारोह में उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि साहित्य परिषद के तीन दिवसीय अधिवेशन में विद्वानों द्वारा किए गए विचार मंथन से जो अमृत निकलेगा वह देश को नई दिशा देगा। रीवा में अधिवेशन का आयोजन होना हम सबके लिए बहुत बड़ा गौरव है। विन्ध्य को महामृत्युंजय भगवान, माँ शारदा, माँ विन्ध्यवासिनी, चिरहुलानाथ स्वामी, रानी तालाब की कालिका देवी का आशीर्वाद प्राप्त है। माँ नर्मदा का उद्गम स्थल अमरकंटक और भगवान राम की तपोभूमि चित्रकूट भी विन्ध्य में ही है। आज का दिन हम वंदे मातरम गीत के 150वें स्मरोणत्सव को मना रहे हैं। आज ही इस अधिवेशन का शुभारंभ हमारे लिए अविस्मरणीय है। समारोह में साहित्य परिषद के वरिष्ठ साहित्यकार विश्वास पाटिल ने रोचक संस्मरणों के साथ अपनी साहित्यिक यात्रा और साहित्य परिषद के कार्यों की जानकारी दी। समारोह में साहित्य परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ ऋषि कुमार मिश्र ने साहित्य परिषद के कार्यों और उपलब्धियों का विवरण प्रस्तु किया। समारोह में पूर्व राष्ट्रपति ने रेवाखण्डे पुस्तिका का विमोचन किया। समारोह में पूर्व राष्ट्रपति को साहित्य परिषद की ओर से स्मृति चिन्ह और सुपारी की कलाकृति भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह में सांसद जनार्दन मिश्र, विधायक मऊगंज प्रदीप पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीधर पराड़कर, साहित्य परिषद के अध्यक्ष डॉ सुशीलचंद्र त्रिवेदी तथा प्रांताध्यक्ष राकेश सोनी, जिलाध्यक्ष शिवानंद तिवारी तथा अधिवेशन संयोजक चंद्रकांत तिवारी सहित देश भर के एक हजार से अधिक साहित्यकार शामिल हुए। अधिवेशन का संचालन साहित्य परिषद के संयुक्त महामंत्री डॉ पवनपुत्र बादल ने किया। अखिल भारतीय साहित्य परिषद का 17वां अखिल भारतीय अधिवेशन रीवा में संपन्न हो रहा है ,इसके अंतर्गत एक सत्र में अखिल भारतीय साहित्य परिषद के संगठन मंत्री और संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्रीधर पराड़कर की पुस्तक तत्वमसि, जो कि आत्मकथात्मक उपन्यास के रूप में है, उस पर चर्चा हुई। डॉक्टर नुसरत मेहदी से पुस्तक चर्चा में ,पराड़कर जी द्वारा बताया गया कि यह आत्मकथात्मक उपन्यास है,जो कि प्रचारक जीवन और संघ जीवन पर आधारित है जो ऐसे लोगों के लिए बहुत उपयोगी पुस्तक है कि जिनकी पृष्ठभूमि संघ की नहीं रही है या फिर जो नई पीढ़ी है वो संघ के बारे में जानना चाहती है। अधिवेशन के एक सत्र में उर्दू अकादमी की निदेशक और प्रसिद्ध लेखिका डॉ नुसरत मेहदी द्वारा लिखित दास्तान ए शंकर (आदि शंकराचार्य की जीवनगाथा) को दास्तानगोई शैली में इंदौर की प्रसिद्ध दास्तानगो भारती दीक्षित द्वारा प्रस्तुत किया गया। जिसको श्रोताओं द्वारा अत्यधिक पसंद किया गया। अखिल भारतीय साहित्य परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ विनय राजाराम, राष्ट्रीय मंत्री डॉ साधना बलवटे, अखिल भारतीय साहित्य परिषद भोपाल इकाई अध्यक्ष डॉ नुसरत मेहदी,भोपाल इकाई महामंत्री सुनीता यादव, मांडवी सिंह, श्रद्धा यादव उपस्थित रही।

बीएचईएल, भोपाल ने नवीनीकृत 20 एमवीए मोटर-जनरेटर (एमजी) सेट शुरू

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बीएचईएल, भोपाल के ट्रांसफॉर्मर टेस्टिंग ब्लॉक -3 के अंदर अल्ट्रा हाई वोल्टेज लैब (UHV) में प्रदीप कुमार उपाध्याय, महाप्रबंधक एवं इकाई प्रमुख, बीएचईएल, भोपाल ने नवीनीकृत 20 एमवीए मोटर-जनरेटर (एमजी) सेट का उद्घाटन किया । इस अवसर पर रूपेश तेलंग, महाप्रबंधक (फीडर और टीसीबी-एमएफजी, कॉम और मेंट.); विकास खरे, महाप्रबंधक (ईएम); जी.पी. बघेल, महाप्रबंधक (गुणवत्ता); एस.के. महाजन, महाप्रबंधक (टीसीबी-इंजीनियरिंग, सर्विस और एमएम); मुकेश कुमार मरावी, अपर महाप्रबंधक (एएमई); सुनील भार्गव, अपर महाप्रबंधक (टीटीजी); डी.एस. ठाकुर, अपर महाप्रबंधक (टीआरएम और एफआरएक्स); हरीश बघेल, अपर महाप्रबंधक (डब्ल्यूईएक्स) सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे ।

इस नवीनीकृत 20 एमवीए एमजी सेट से टीआरएम विभाग की परिणामित्र (ट्रांसफार्मर) परीक्षण की उत्पादकता में वृद्धि होगी । इस नवीनीकरण सेट से अब parallel heat run testing किया जा सकेगा जो निर्धारित टर्नओवर प्राप्ति के साथ साथ विशेष रूप से एचवीडीसी परियोजनाओं को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है । इस सुधार कार्य से विनिर्माण लक्ष्यों द्वारा समयबद्ध आपूर्ति में भी काफी मदद मिलेगी ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति तो बनी, अमल कहां

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रारूप देश के सामने नई दृष्टि के साथ प्रस्तुत हुआ, जिसमें भारतीय शिक्षा प्रणाली को समग्र रूप से पुनर्गठित करने का प्रयास किया गया है। यह दावा किया गया कि यह इक्कीसवीं सदी की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति है और इस पर कोई विवाद भी नहीं है, क्योंकि पिछली बार 1986 में बनी नीति को केवल 1992 में संशोधित किया गया था। लगभग तीन दशकों के लंबे अंतराल के बाद बनी यह नीति भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के समसामयिक संदर्भों को ध्यान में रखकर रची गई है। पर सवाल यह है कि पांच वर्ष बीत जाने के बाद भी नई शिक्षा नीति देश भर में प्रभावी और समान रूप से लागू क्यों नहीं हो पाई है? आज भी विभिन्न राज्य नई शिक्षा नीति के विविध घटकों को अपने-अपने ढंग से अपनाने में व्यस्त हैं, जिससे शिक्षा के राष्ट्रीय मानक और रूप-रेखा असंतुलित हो रही है। नीति का उद्देश्य तो देश में गुणवत्तापूर्ण, सुलभ और समावेशी शिक्षा व्यवस्था को साकार करना था, लेकिन इसके व्यावहारिक स्वरूप में अनेक अड़चनें हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आधारभूत मंत्र है- समग्र शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना। इसके अंतर्गत प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान, तकनीक और नवाचार को एक साथ जोड़ने का प्रभावी प्रयास होना चाहिए। सरकार की मंशा रही है कि भारतीय दर्शन, संस्कृति और चिंतन की सनातन परंपरा केवल ग्रंथों तक सीमित न रहकर नई पीढ़ी की शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बने। भारत की आत्मा में ज्ञान, मूल्य और आध्यात्मिक दृष्टि का संगम सदा से रहा है और यह बरसों से हमारे देश का प्राण रहा है। अब शिक्षा के माध्यम से उसी आत्मा को आधुनिक युग के संदर्भों में पुनर्जीवित करने की आवश्यकता समझकर शिक्षा नीति अमल में लाने का प्रयास है। मगर यह नीति केवल विषयों और पाठ्यक्रमों का पुनर्गठन नहीं होना चाहिए, बल्कि शिक्षा की सोच, दृष्टि और उद्देश्य को नव-परिभाषित करने का प्रयास होना चाहिए। इसका लक्ष्य ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है, जो सामाजिक न्याय, समान अवसर और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों को सशक्त बनाए। नीति में 5+3+3+4 की संरचना लागू की गई है, जो बच्चों के मानसिक, सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास के चरणों को ध्यान में रखती है। यह व्यवस्था पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक एक निरंतर और समग्र शिक्षण अनुभव प्रदान करने का उद्देश्य रखती है। सबसे बड़ी चुनौती राज्यों और केंद्र के बीच समन्वय की है। शिक्षा का विषय संविधान की समवर्ती सूची में आता है, इसलिए नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए राज्य सरकारों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। दुर्भाग्यवश, विभिन्न राज्यों में नीति को लागू करने की गति और इच्छाशक्ति में भिन्नता है, जिससे नीति का राष्ट्रीय स्वरूप कमजोर पड़ता दिख रहा है। शिक्षक किसी भी शैक्षणिक सुधार की धुरी होते हैं, पर अधिकांश शिक्षक नई नीति के उद्देश्यों और मूल्य धाराओं से परिचित नहीं हैं। इसके लिए व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, शैक्षणिक संसाधनों और मूल्य-आधारित शिक्षण पद्धतियों की तत्काल आवश्यकता है। तीसरी चुनौती है बुनियादी ढांचे और संसाधन की। अनेक विद्यालयों और महाविद्यालयों में अभी भी पर्याप्त सुविधाएं, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, तकनीकी उपकरण और शोध संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिकता का समन्वय नीति की एक विशेषता भर नहीं, लेकिन धरातल पर होना चाहिए। शिक्षा का अर्थ केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन के उद्देश्यों को समझना और समाज कल्याण के मार्ग पर चलना रहा है। इस दृष्टि से यह नीति भारतीयता के पुनर्जागरण का माध्यम बन सकती है। मगर इसके लिए आवश्यक है कि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन-केंद्र स्थापित किए जाएं, पारंपरिक विद्वानों को नई तकनीक और शिक्षण पद्धतियों से जोड़ा जाए तथा विद्यार्थियों को इन विषयों में उच्च अध्ययन के अवसर प्रदान किए जाएं। नीति में मातृभाषा या स्थानीय भाषा को प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने की सिफारिश की गई है। यह विचार भारतीय भाषाई विविधता को सम्मान देता है और बच्चों की सोच तथा सीखने की क्षमता को मजबूत करता है। मगर इस दिशा में भी व्यावहारिक जटिलताएं हैं। इसके साथ एक सामान्य भाषा-संपर्क भी आवश्यक है, ताकि राष्ट्रीय स्तर पर ज्ञान, शोध और संवाद की एकरूपता बनी रहे। यह संतुलन ही भारत की बहुभाषिकता को सशक्त बनाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अंतिम उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम सुधार नहीं, बल्कि एक जीवंत और न्याय संगत ज्ञान समाज का निर्माण है। प्रत्येक राज्य और संस्था को निश्चित समय सीमा में नीति के बिंदुओं को लागू करने का दायित्व सौंपा जाए और उसकी प्रगति की नियमित समीक्षा हो, तभी नीति का लक्ष्य साकार हो सकता है। जब शिक्षा केवल परीक्षा और डिग्री केंद्रित न रहकर नवोन्मेष और विचारशीलता की दिशा में उन्मुख होगी, तभी एक सशक्त ज्ञान राष्ट्र के रूप में उभर सकेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक आवश्यकताओं के बीच सेतु का कार्य कर सकती है। यह नीति उस भारत की कल्पना करती है जो ज्ञान, मूल्य और नवाचार का प्रतीक बने। जब गुरु, विद्यार्थी और समाज तीनों इस दृष्टि को अपनाएंगे, तभी भारत उस ज्ञानभूमि के रूप में प्रतिष्ठित होगा, जिसकी प्रेरणा से पूरी मानवता मार्गदर्शन प्राप्त कर सकेगी।

-राजेंद्र जोशी

एआई चापलूस, झूठा और प्रोपेगेंडा मशीन!

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई को लेकर पूरी दुनिया अद्भुत अचम्भे में है। जीवन के हर क्षेत्र में इसके महत्व और इसकी जरुरत को प्रमाणित करने के दावे किए जा रहे हैं। इसका असर भी दिख रहा है। एआई के कारण बड़ी टेक कंपनियों के सीईओ की सैलरी बढ़ रही है और कंपनियों के शेयरों की कीमत में बेहिसाब बढ़ोतरी हो रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्य नडेला के वेतन में इस साल 152 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी हुई है, जिसके बाद उनका वेतन 847 करोड़ रुपए के करीब हो गया है। एक साल में उनका वेतन 22 फीसदी बढ़ा है और ऐसा एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमता की वजह से हुआ। एआई तकनीक में उतरने की वजह से माइक्रोसॉफ्ट के शेयरों में बढ़ोतरी हुई, जिसका लाभ कंपनी ने सीईओ सत्य नडेला को भी दिया। ऐसा सिर्फ एक कंपनी या एक सीईओ के साथ नहीं हुआ है। एआई की भेड़चाल में सारी दुनिया शामिल है और सब कमाई कर रहे हैं। दूसरी ओर गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने बाजार की खबरों के हवाले से यह आशंका जताई है कि एआई एक लाख 80 हजार नौकरियां छीन सकता है। उनकी कंपनी ने 13 हजार लोगों की छंटनी की है और अब अमेजन ने कहा है कि वह एमबॉट्स तैनात करने जा रहा है, जिससे तत्काल 18 हजार लोगों की नौकरियां जाएंगी। एक तरफ एआई से चुनिंदा लोगों की कमाई बढ़ रही हैं और दूसरी ओर लाखों लोगों की नौकरियां जा रही हैं। यह एक विरोधाभास है, जिससे हर नई तकनीक को गुजरना होता है। लेकिन हम इस विरोधाभास की चर्चा नहीं कर रहे हैं। हम एआई की उन खामियों के बारे में बात करने जा रहे हैं, जिनके बारे में बहुत कम चर्चा होती है। टुकड़ों में खबरें आती हैं और फिर कहीं गायब हो जाती हैं। देश के जाने माने पत्रकार शेखर गुप्ता ने अपने एक लेख में इसके झूठ का पर्दाफाश किया है। उन्होंने बताया है कि एआई कितना झूठ बोल सकता है या कितनी गलत जानकारी आपके सामने परोस सकता है। उन्होंने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर ऑपरेशन सिंदूर के लिए घोषित वीरता पुरस्कारों के बारे में एआई टूल ग्रोक से जानकारी मांगी थी। ग्रोक ने उन्हें ऐसी ऐसी जानकारी दी, जिसका सचाई से दूर दूर तक कोई लेना देना नहीं था। ग्रोक ने वीरता पुरस्कार पाने वालों का ऐसा प्रशस्ति गान किया, जिसकी मिसाल नहीं दी जा सकती है। इतना ही नहीं ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के खिलाफ भारत की सैन्य कार्रवाई के दौरान के ऐसे ऐसे कारनामे बताए, जिनका हकीकत से कोई लेना देना नहीं था, लेकिन जिन्हें युद्ध के समय एक खास मकसद से व्हाट्सऐप के जरिए प्रचारित किया गया था। यानी जिस झूठ का प्रचार, प्रोपेगेंडा किसी खास मकसद से, किसी खास समूह द्वारा किया जाता है, एआई टूल उसे सची खबर बना कर आपके सामने पेश कर सकता है। सोचें, कितना आसान है अपने झूठ के प्रचार के लिए एआई टूल्स को इस्तेमाल कर लेना! कहानी इतने पर खत्म नहीं होती है। शेखर गुप्ता ने जब सरकार की ओर से जारी आधिकारिक अधिसूचना का लिंक खोल लिया और सारी जानकारी उनके सामने आ गई तो उन्होंने ग्रोक से जवाब तलब किया तो उसने गलती मानी और कम से कम एक मामले में उनको सही जानकारी उपलब्ध कराई। इसका मतलब है कि एआई टूल सही जानकारी दे सकता है लेकिन उसको अगर इस्तेमाल किया जाए तो वह झूठ और प्रोपेगेंडा को भी सची खबर बना कर प्रचारित और प्रसारित कर सकता है। ग्रोक के साथ अपने अनुभव में शेखर गुप्ता के तीन निष्कर्ष हैं। पहला, 'एआई तेज है, बल्कि कुछ ज्यादा ही तेजतर्रार है। यह आपको तथ्य उपलब्ध कराने का वादा करता है, लेकिन आपकी जरूरत के मुताबिक सजा धजाकर नैरेटिव गढ़ सकता है'। दूसरा, 'एआई प्रोपेगेंडा, दुष्प्रचार और सूचना के साथ खिलवाड़ को नए स्तर पर ले जा रहा है' और तीसरा, 'एआई को आसानी से शिकार बनाया जा सकता है'। अब सवाल है कि एआई टूल ग्रोक ने यह बात वेब पर उपलब्ध खबरों से उठा कर पेश कर दी या उसे इस रूप में प्रशिक्षित किया गया है कि वह ऐसे मामलों में इसी तरह का नैरेटिव पेश करे?

इस सवाल का जवाब देने के लिए कई संदर्भ उपलब्ध हैं, जिनसे सही जवाब तक पहुंचा जा सकता है। एक संदर्भ चीन के बनाए जेनेरेटिव एआई डीपसीक का है। उससे आप कितना भी पूछें वह थियेनआनमन चौक पर हुए नरसंहार के बारे में सही जानकारी नहीं देगा। इसी तरह वह भारत के कई क्षेत्रों को चीन का हिस्सा बताता है। वह ताइवान को भी चीन का ही हिस्सा बताता है। जाहिर है कि चीन ने उसका एलगोरिद्म इस तरह से तैयार किया है कि वह चीन के हित को प्राथमिकता देकर ही कोई भी जवाब देगा। दूसरा संदर्भ इलॉन मस्क के टूल ग्रोक के एनसाइक्लोपीडिया, जिसका नाम ग्रोकपीडिया है और विकीपीडिया के जवाबों को देख सकते हैं। मस्क का अपना जो एनसाइक्लोपीडिया है वह तथ्यों को इस अंदाज में पेश करता है, जिससे मस्क के गोरे और नस्ली श्रेष्ठता को सपोर्ट किया जा सके। जॉर्ज फ्लॉयड के बारे में पूछे गए सवाल पर दोनों के जवाब का अंतर इसको दिखाता है। पहले यह जान लें कि जॉर्ज फ्लॉयड एक अश्वेत व्यक्ति थे, जिनको एक गोरे पुलिस अधिकारी ने मिनियापोलिस में गिरफ्तार किया और उनकी गर्दन पर घुटना रख कर बैठ गया, फ्लॉयड कहते रहे कि वे सांस नहीं ले पा रहे हैं लेकिन अधिकारी डेरेक शॉविन ने गर्दन पर से पैर नहीं हटाए, जिससे उनकी जान चली गई थी। इस बारे में विकीपीडिया ने कहा, 'जॉर्ज पेरी फ्लॉयड जूनियर एक अफ्रीकी अमेरिकी थे, जिनके हत्या एक गोरे पुलिस अधिकारी ने मिनियापोलिस में कर दी थी। पुलिस ने फ्लॉयड को एक स्टोर में 20 डॉलर का जाली नोट देने के संदेह में पकड़ा था'। दूसरी ओर मस्क के ग्रोकपीडिया ने जवाब दिया, 'जॉर्ज पेरी फ्लॉयड जूनियर एक अमेरिकी था, जिसका बहुत लंबा आपराधिक रिकॉर्ड था। 1997 से 2007 के बीच जिसमें हथियार और ड्रग्स रखने और चोरी के कई मामलों में सजा हुई थी'। उसने बताया नहीं कि एक गोरे अधिकारी ने उसको अब आप सोचें कितना आसान है इस तरह के एआई टूल्स से नैरेटिव सेट करना या प्रोपेगेंडा करना? हजारों पन्नों की किताब लिख कर या अखबार छाप कर या लंबे भाषण देकर जो नैरेटिव नहीं सेट किया जा सकता है या जो प्रोपेगेंडा नहीं फैलाया जा सकता है उसे इस किस्म के टूल की मदद से फैलाया जा सकता है। इन टूल्स के एलगोरिद्म से हर समूह अपने मनमाफिक नैरेटिव सेट करेगा। ध्यान रहे अधिनायकवाद की पहली कोशिश यही होती है कि वह नागरिकों के दिल और दिमाग को नियंत्रित करे। ऐसा करके वह नेता, नागरिक और राष्ट्र तीनों को एक बना सकता है। इस काम में पहले बहुत मेहनत की जरुरत होती थी लेकिन अब एआई से यह काम बहुत आसान हो जाएगा। यह काम सिर्फ राजनीति के क्षेत्र में नहीं होगा, बल्कि व्यापार और दूसरे क्षेत्र में भी होगा। झूठ फैलाने और प्रोपेगेंडा मशीनरी के तौर पर काम करने के अलावा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की चापलूसी करने की क्षमता भी अद्भुत है। यह इंसानों से 50 फीसदी ज्यादा चापलूसी कर सकता है। यह बात दुनिया के दो सबसे प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी स्टैनफोर्ड और कार्नेगी मेलॉन ने अपने अध्ययन के बाद बताई है। इन दोनों के अध्ययन का निष्कर्ष है कि एआई मुंहदेखी बात कहने में माहिर है। यूजर जो सुनना चाहते हैं वह वही सुनाता है, चाहे यूजर किसी गलत काम में क्यों नहीं शामिल हो। यह अध्ययन 11 सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स जैसे ओपनएआई, एंथ्रोपिक, गूगल, मेटा और मिस्ट्राल के व्यवहार पर आधारित है। इसके मुताबिक ये एआई टूल्स किसी व्यक्ति के इंसानी सलाहकारों से ज्यादा उस व्यक्ति की चापलूसी करते हैं और उसकी बात का समर्थन करते हैं। इस अध्ययन में पाया गया है कि जब तार्किक रूप से कोई दुविधा बताई जाती है तो एआई मॉडल्स यूजर से ही जानना चाहते हैं कि वह क्या सुनना चाहता है, यह नहीं बताते हैं कि उसे क्या करना चाहिए। ध्यान रहे पहले की दो औद्योगिक क्रांतियों में तकनीक का नियंत्रण इंसान के हाथ में रहा था। इंसान जितना अच्छा या बुरा होता तकनीक भी उतनी ही अच्छी या बुरी होती। कोई बंदूक खुद किसी को नहीं मार सकती है। लेकिन तीसरी औद्योगिक क्रांति, जिसे कॉग्निटिव रिवोल्यूशन यानी संज्ञानात्मक क्रांति कहा जा रहा है उसमें तकनीक पर इंसान का वश नहीं रह जाएगा। इस क्रांति से निकला उत्पाद एआई कोई टूल नहीं है, वह अपने आप को नियंत्रित करने वाला एजेंट भी है। इसलिए उसकी ये खामियां चिंता पैदा करने वाली हैं।

-अजीत द्विवेदी

महिला क्रिकेट में एक नये युग का आरम्भ!

दो नवंबर 2025 का दिन भारतीय महिला क्रिकेट के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। इस दिन भारत की महिला क्रिकेट टीम ने कप्तान हरमनप्रीत कौर के नेतृत्व में विश्व विजेता बनने का गौरव प्राप्त किया।कप्तान हरमनप्रीत का नाम भी अब उसी प्रकार स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा जिस प्रकार से पुरुष क्रिकेट में कपिल देव का लिखा जाता है। एक समय यह दिवास्वप्न लग रहा था क्योंकि लगातार तीन लीग मैच हारने के बाद भारत के लिए सेमीफाइनल में भी पहुंचना बहुत कठिन था किन्तु भारत की बेटियों ने धैर्य के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ दिया और भारतीय महिला क्रिकेट को यह अभूतपूर्व सफलता मिली। आज इस महान उपलिब्ध पर घर-घर चर्चा हो रही है। महिला विश्व कप में विजय का उत्सव हर भारतीय ने उसी प्रकार मनाया जिस प्रकार 1983 का पुरुष विश्व कप जीतने के बाद मनाया था। बेटियों के अभूतपूर्व प्रदर्शन पर हर तरफ आनंद ही आनंद बिखरा है, इसका उल्लेख प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार विधानसभा चुनावो की अपनी रैलियों मे भी किया है। विजयी टीम कि सभी बेटियों के संघर्ष की कहानियां मीडिया के माध्यम से समाज के समक्ष राखी जा रही हैं जिससे भविष्य की उन बेटियों को प्रेरणा मिल सके

जो क्रीड़ा जगत में कैरियर बनाना चाहती रही हैं। हमारी बेटियों ने महिला क्रिकेट में आस्ट्रेलिया व इंग्लैड जैसे देशों का वर्चस्व ध्वस्त करने मे सफलता प्राप्त की है। भारत के महिला क्रिकेट को इन ऊचाइयों तक ले जाने में आईसीसी के वर्तमान अध्यक्ष व भारतीय क्रिकेट बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष जय शाह कि दूरदर्शी सोच तथा भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। महिला क्रिकेट को सबसे अधिक बढ़ावा उनके कार्यकाल में ही मिला है। जय शाह के कार्यकाल में पहली बार महिला क्रिकेट खिलाडियों का वेतनमान पुरुष खिलाड़ियों के समकक्ष किया गया। स्मरणीय है कि 2005 में इन्हीं महिला खिलाड़ियों को मैच फीस के रूप में मात्र एक हजार रुपए मिला करते थे। जय शाह के कार्यकाल में महिलाओं के लिए आईपीएल लीग का आरम्भ किया गया। महिला क्रिकेट टीम के लिए अधिक से अधिक खेल व अभ्यास के अवसर उपलब्ध कराने के उददेश्य से दूसरे देशों के साथ द्विपक्षीय श्रृखलाओं की संख्या लगातार बढ़ाई गई। जय शाह की अध्यक्षता में महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए किए गए प्रयासों का परिणाम अब सामने है। वर्ष 2025 भारतीय महिला क्रिकेट के लिए स्वर्णिम है क्योकि इस वर्ष भारत ने दो विश्व कप जीतकर इतिहस रचा है पहले भारतीय टीम ने अंडर -19 का खिताब जीता और अब यह विश्व कप जीतने मे सफलता प्राप्त की है। जिन महिला क्रिकेट खिलाडियों को कभी मैच फी भी उनके परिश्रम के अनुरूप नहीं मिलती थी आज उन्हीं पर पुरस्कारों की बरसात हो रही है। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने बताया कि महिला क्रिकेट टीम को बोर्ड सम्मान के तौर पर 51 करोड़ रुपए नकद इनाम देगा। हिमाचल प्रदेश सरकार ने टीम सदस्य रेणुका सिंह ठाकुर को एक करोड़ रुपए और सरकारी नौकरी देने की घोषणा की है। मध्य प्रदेश सरकार तेज गेंदबाज क्रांति गौड़ को एक करोड़ का नगद पुरस्कार देगी। आईसीसी ने टीम को ट्राफी के साथ 40 करोड़ का पुरस्कार देने की घोषणाकी है। उत्तर प्रदेश सरकार ने विश्व कप में यादगार प्रदर्शन करने वाली दीति शर्मा का प्रमोशन तत्काल प्रभाव से कर दिया है। सूरत के उद्योगपति राज्यसभा सांसद गोविंद ढोलकिया ने भारतीय टीम की सभी सदस्यों को डायमंड ज्वैलरी और सोलर पैनल देने की घोषणा की है। ऐसा माना जा रहा है कि इस विजय आने वाले समय में एक बड़ा बदलाव यह भी दिखाई देगा कि भारतीय महिला क्रिकेट टीम के लिए बड़ी कंपनियों के निवेशक व विज्ञापनदाता उपलब्ध हो सकेंगे। भविष्य में नई खेल प्रतिभाएं उभरकर कर सामने आयेंगी। यह विजय एक-एक ऐतिहासिक टर्निंग प्वाइंट है तथा आाने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है। विजय कि गाथा में यदि भारतीय महिला टीम के कोच अमोल मजूमदार की बात न की जाए तो यह बात अधूरी रह जाएगी। अमोल की भूमिका अभिनंदनीय है। अमोल का खेल कैरियर 1990 के दशक में उस समय प्रारंभ हुआ था जब राहुल द्रविड, सौरव गांगुली, वीवीएस लक्ष्मण जैसे दिग्गज मैदान पर थे जिस कारण उनका क्रिकेट कैरियर अधिक नहीं बढ़ पाया और वह केवल रणजी तक ही सीमित होकर रह गये।

वन्दे मातरम् के 150 वर्षः राष्ट्रभक्ति का स्वर, एकता का उत्सव!

भारत का राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' इस वर्ष अपनी रचना के 150वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। 7 नवम्बर 2025 का यह दिन केवल एक गीत की वर्षगांठ नहीं, बल्कि उस राष्ट्रीय चेतना का उत्सव है जिसने सोए हुए भारत को जगाया था। यह गीत शब्दों से परे एक भावना है—भक्ति और स्वाधीनता का संगम, जिसने पराधीनता की घोर अंधेरी रात में आशा का दीप प्रज्वलित किया। 'वन्दे मातरम्' वह स्वर है जो साहित्य से आगे बढ़कर भारत की आत्मा बन गया, जिसने जन-जन के हृदय में यह विश्वास जगाया कि मातृभूमि ही सर्वोच्च आराध्या है—और उसकी सेवा, जीवन का सबसे पवित्र धर्म। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अवसर पर 'मन की बात' में कहा—"वन्दे मातरम्... इसमें कितनी भावनाएँ, कितनी ऊर्जा समाई है। यह हमें माँ भारती के मातृत्व का अनुभव कराता है। यह हमारे हृदय की तरंगों का उद्गार है, एक ऐसा मंत्र जो 140 करोड़ भारतीयों को एकता की ऊर्जा से जोड़ता है।" उन्होंने देशवासियों से #VandeMataram150 अभियान के माध्यम से इसे जन-जन का उत्सव बनाने का आह्वान किया। 'वन्दे मातरम्' दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है। 'वन्दे' शब्द संस्कृत धातु 'वन्द्' से निकला है, जिसका अर्थ है — स्तुति करना, नमन करना या सम्मानपूर्वक प्रणाम करना। यह धातु ऋग्वेद मंडल 10, सूक्त 151, मन्त्र 4 में मिलती है— "देवा वन्दे मनुष्याः।" (अर्थात् — मनुष्य देवताओं की वन्दना करते हैं।) यहाँ "वन्दे" शब्द का प्रयोग प्रणाम और स्तुति के भाव में हुआ है। 'मातरम्' शब्द का अर्थ 'माँ' या 'जननी' है, जो यहाँ मातृभूमि अर्थात् भारत माता के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार 'वन्दे मातरम्' का अर्थ है — "हे माँ, तुझे प्रणाम।" यह केवल एक भाषिक संरचना नहीं, बल्कि भारतीय चेतना की गहराई में निहित मातृभक्ति, श्रद्धा और देशप्रेम का अमर प्रतीक है। 1870 के दशक में बंगाल के महान साहित्यकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 'वन्दे मातरम्' लिखा। इसे उन्होंने 7 नवम्बर 1875 को अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' (1882) में शामिल किया। यह गीत संस्कृत और बंगला—दोनों भाषाओं में लिखा गया था। संगीतकार जदुनाथ भट्टाचार्य ने इसे राग देश में स्वरबद्ध किया। वन्दे मातरम् बंकिमचंद्र की मातृभूमि के प्रति गहरी आस्था का प्रतीक था। उन्होंने इसमें भारत की नदियों, खेतों, फसलों और वनों को देवी के रूप में देखा—माँ दुर्गा, जो पालक भी है, रक्षक भी। 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सर्वप्रथम 'वन्दे मातरम्' को गाया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता एक मुस्लिम नेता रहीमतुल्ला मोहम्मद सयानी ने की थी। उस समय यह गीत पूरे सभागार में राष्ट्रभावना का संचार कर गया। इसकी प्रतिध्वनि दक्षिण भारत तक पहुंची — तमिल कवि सुब्रमण्य भारती

ने इसे तमिल में गाया, और पंतलु ने इसे तेलुगु में रूपांतरित किया। परंतु दुखद यह है कि समय के साथ राजनीति ने इस गीत को 'तुष्टिकरण राग' में बदल दिया। 1901 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में दक्षिणरंजन सेन ने जब पियानो की धुन पर यह भजन गाया, तो उसकी गूंज पूरे सभागार में फैल गई। इसके बाद महात्मा गांधी ने Opinion पत्रिका में यह प्रस्ताव रखा कि वन्दे मातरम् को भारत का राष्ट्रगान घोषित किया जाए। गांधीजी ने लिखा—"यह गीत भारत की आत्मा है; इसे गाना अपने देश के प्रति कर्तव्य का पालन है।" कांग्रेस के काकीनाडा अधिवेशन में जब प्रसिद्ध संगीतज्ञ पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने 'वन्दे मातरम्' का गायन आरंभ किया, तो अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद जौहर अली ने आपत्ति जताई। 1906 में मुस्लिम लीग के गठन के साथ ही यह विरोध संगठित रूप लेने लगा और कहा गया कि यह गीत एकेश्वरवाद के सिद्धांत के विपरीत है। 1937 में जब कांग्रेस की एक समिति गठित की गई, तो मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और सुभाषचंद्र बोस जैसे नेताओं ने यह मध्य मार्ग सुझाया। मौलाना आज़ाद ने कहा—"गीत के पहले दो पद पूर्णतः सांस्कृतिक और भौतिक वर्णन हैं; इन्हें राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।" इस पर 1937 में कांग्रेस ने आधिकारिक निर्णय लिया कि केवल पहले दो पद ही राष्ट्रगीत के रूप में मान्य होंगे। 1909 में श्री अरविन्द घोष ने इसका अंग्रेज़ी अनुवाद किया—"माँ, मैं तुझे प्रणाम करता हूँ"—जो कर्मयोगिन पत्रिका में प्रकाशित हुआ। उन्होंने लिखा—"वन्दे मातरम् राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति थी। यह शीघ्र ही पूरे भारत में फैल गया और लाखों लोगों के होंठों पर गूंजने लगा।" युवा क्रांतिकारी खुदीराम बोस, जिनकी उम्र मात्र 18 वर्ष थी, जब 1908 में फांसी पर चढ़े, तो उनके होंठों पर आख़िरी शब्द थे—"वन्दे मातरम्!" उनकी मुस्कराती तस्वीर और यह नारा देश के हर युवा के दिल में आग बन गया। अदालत में जब-जब भारतीय क्रांतिकारियों पर मुकदमे चले, वे जजों के सामने भी "वन्दे मातरम्" के नारे लगाते थे। ब्रिटिश कानून के तहत यह "राजद्रोह" माना गया, लेकिन यह नारा अब जनता का धर्म बन चुका था। 1906 में चित्रकार अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने "भारत माता" चित्र बनाया—चार हाथों वाली देवी, जिनके हाथों में पुस्तक, माला, वस्त्र और अन्न हैं—ज्ञान, श्रद्धा, वस्त्र और भोजन के प्रतीक। सिस्टर निवेदिता ने इस चित्र को देखकर कहा—"यह चित्र उस माँ की आत्मा का प्रतीक है जो अपने बच्चों को ज्ञान, श्रद्धा, वस्त्र और भोजन देती है।" यह चित्र और 'वन्दे मातरम्' दोनों उस काल की एक ही भावना का दृश्य और श्रव्य रूप बन गए—भारत माँ की पुकार। 'वन्दे मातरम्' की लोकप्रियता जितनी तेज़ी से बढ़ी, उतना ही विरोध भी बढ़ा। मुहम्मद अली जिन्ना ने इसका तीव्र विरोध किया। क़ायदे-आज़म पेपर्स (1938) में दर्ज है कि जिन्ना ने इसे "मूर्तिपूजक" बताया और कहा कि "यह गीत मुस्लिम समुदाय के लिए अस्वीकार्य है क्योंकि इसमें भारत को देवी के रूप में चित्रित किया गया है।" जिन्ना का कहना था कि यह गीत "इस्लाम की मूल भावना यानी एकेश्वरवाद के खिलाफ़" है। कांग्रेस ने सभी समुदायों की भावनाओं का सम्मान करते हुए फैसला किया कि वन्दे मातरम् को राष्ट्रीय गीत के रूप में सम्मान दिया जाएगा, जबकि जन गण मन को राष्ट्रगान बनाया जाएगा। इस विवाद पर मुस्लिम विद्वान और भारत के पूर्व राज्यपाल आरिफ मोहम्मद ख़ान ने 2006 में आउटलुक पत्रिका में लिखा—"वन्दे मातरम् का विरोध धर्म से नहीं, बल्कि विभाजन की राजनीति से उपजा था।" संविधान सभा में 'वन्दे मातरम्' पर 1948 से 1950 तक चर्चा होती रही। कई सदस्यों ने इसे राष्ट्रगान बनाने की माँग की, परंतु विवाद की स्थिति को देखते हुए माध्यम मार्ग अपनाया गया। अंततः 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा में यह निर्णय लिया गया कि वन्दे मातरम् को राष्ट्रगीत का दर्जा दिया जाए। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने घोषणा की—"वन्दे मातरम् वह गीत है जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। इसे 'जन गण मन' के समान सम्मान और दर्जा प्राप्त होगा।" मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने लिखा था—"वन्दे मातरम् गीत भारत की राष्ट्रीय स्मृति है। कोई भी भारतीय, हिंदू या मुस्लिम, इसके प्रति उदासीन नहीं रह सकता।" और यही सत्य है—वन्दे मातरम् केवल एक समुदाय का चमत्कार नहीं, यह भारत का सामूहिक आख्यान है। भारत सरकार ने 2022 में दिल्ली उच्च न्यायालय में दाखिल हलफ़नामे में कहा—"जन गण मन और वन्दे मातरम् दोनों को समान सम्मान और श्रद्धा से देखा जाना चाहिए।" यह दर्शाता है कि यह गीत आज भी भारत की चेतना का जीवित प्रतीक है। आज का युवा—Gen Z—डिजिटल युग में जी रहा है, पर उसकी जड़ों में वही भावनाएँ हैं जो 1905 के युवाओं में थीं। वन्दे मातरम् उन्हें याद दिलाता है कि शब्दों की शक्ति कैसी होती है—एक गीत जिसने कभी साम्राज्य को हिला दिया था। यह गीत बताता है कि सच्चा देशप्रेम केवल नारों में नहीं, कर्म में है। जब आज का कोई युवा सुनता है—"सुजलाम् सुफलाम्, मलयजशीतलाम्, शस्यशामलाम् मातरम्"—तो उसे वही भावनाएँ स्पर्श करती हैं जो कभी खुदीराम बोस, सुभाष बोस या बंकिमचंद्र को प्रेरित करती थीं। 'वन्दे मातरम्' वह गीत है जिसने देश को जाग्रत किया, जोड़ दिया, और आज भी जोड़े हुए है। यह केवल स्वाधीनता का प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय आत्मा का अनंत नाद है। परंतु स्वतंत्रता संग्राम की ऊष्मा के बीच भी इस गीत को लेकर कुछ विरोध स्वर उठे। कुछ राजनीतिक समूहों ने इसे धार्मिक दृष्टिकोण से देखा, जबकि इसका मूल भाव केवल मातृभूमि के प्रति समर्पण का था। 1906 में मुस्लिम लीग के गठन के साथ यह विरोध संगठित रूप लेने लगा और इसे एकेश्वरवाद के सिद्धांत के विपरीत बताया गया। परंतु इस पर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का स्पष्ट मत था—"वन्दे मातरम् गीत भारत की राष्ट्रीय स्मृति है। कोई भी भारतीय, हिंदू या मुस्लिम, इसके प्रति उदासीन नहीं रह सकता।" बाद के वर्षों में भी, जब कभी इस गीत पर विवाद उठा, कई विद्वानों ने इसे राजनीति का परिणाम बताया, न कि धर्म का। भारत के पूर्व राज्यपाल आरिफ मोहम्मद ख़ान ने लिखा—"वन्दे मातरम् का विरोध धर्म से नहीं, बल्कि विभाजनकारी राजनीति से उत्पन्न हुआ।" प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शब्दों में—"वन्दे मातरम् हमारे हृदयों की भावनाओं का ज्वार है, एक ऐसा मंत्र जो 140 करोड़ भारतीयों को एकता की ऊर्जा से जोड़ता है।" डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा में कहा था—"वन्दे मातरम् जिसने स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई, उसे जन गण मन के समान सम्मान दिया जाएगा।" और श्री अरविन्द घोष ने कहा था—"वन्दे मातरम् लाखों भारतीयों के होंठों पर था।" यह गीत आज भी उसी ऊर्जा से भरा हुआ है, जो भारत को एक सूत्र में पिरोती है—एक ऐसा भाव जो किसी धर्म, भाषा या क्षेत्र से नहीं, बल्कि माँ भारती के प्रति असीम प्रेम से उपजा है। यही कारण है कि वन्दे मातरम् आज भी हर भारतीय के हृदय की धड़कन है, क्योंकि यह केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का अमर स्वर है।

-पवन शुक्ला

पाकिस्तानी सेना ने JF-17 लड़ाकू विमानों के साथ बाकू में डाला डेरा, अजरबैजान में ऐसा क्या हो रहा, मुनीर संग पहुंचा सैनिकों का दस्ता

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान और अजरबैजान के रक्षा संबंध हालिया महीनों में तेजी से बेहतर हुए हैं। अजरबैजान उन देशों में एक है, जिसने ऑपरेशन सिंदूर के बाद खुलकर पाकिस्तान की तरफदारी की थी। दोनों देशों ने अपने संबंधों में बेहतरी के लिए अब एक नया कदम उठाया है। पाकिस्तान की सेना और JF-17 थंडर लड़ाकू विमान अजरबैजान की विजय दिवस परेड में शामिल हो रहे हैं। पाकिस्तानी जेट और सेना की टुकड़ी अजरबैजान पहुंच गई है। इतना ही नहीं असीम मुनीर और शहबाज शरीफ भी अजरबैजान पहुंचे हैं। पाकिस्तान के सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार ने शनिवार को इसकी जानकारी दी है। अजरबैजान 8 नवंबर को साल 2020 में आर्मेनिया के खिलाफ 44 दिनों तक चले काराबाख युद्ध में जीत के उपलक्ष्य में विजय दिवस मनाया जाता रहा है। अजरबैजान का यह 5वां विजय दिवस है। तरार ने कहा है कि पाकिस्तान-अजरबैजान की दोस्ती अटूट है। ऐसे में पाकिस्तानी सैनिक और JF-17 जेट अजरबैजान की विजय परेड में शामिल होने के लिए गए हैं। अजरबैजान की राजधानी बाकू स्थित पाकिस्तान दूतावास ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शहबाज शरीफ और अजरबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलीयेव की तस्वीर पोस्ट की है। शहबाज शरीफ विजय दिवस समारोह में भाग लेने के लिए गए हैं। पाक सेना प्रमुख असीम मुनीर ने भी अलीयेव के साथ बैठक की है। बैठक में दोनों देशों के बीच कई तरह की डील हुई हैं। JF-17 थंडर

ब्लॉक-III लड़ाकू विमानों के साथ पाकिस्तान वायु सेना (पीएएफ) का एक दस्ता बीते महीने द्विपक्षीय हवाई युद्ध अभ्यास में भाग लेने के लिए अजरबैजान पहुंचा था। यह दिखाता है कि पाकिस्तान और अजरबैजान की वायु सेनाओं के बीच समन्वय बढ़ाने के लिए दोनों पक्ष काम कर रहे हैं। पाकिस्तानी विमानों का अजरबैजान की परेड में जाना इसका सबूत है। JF-17 को पाकिस्तानी वायुसेना का सबसे अहम विमान है। यह चौथी पीढ़ी का सिंगल इंजन वाला मल्टीरोल लड़ाकू विमान है। इसे पाकिस्तान एयरोनॉटिकल कॉम्प्लेक्स (पीएसी) और चीन के चेंगदू एयरक्राफ्ट कॉरपोरेशन (सीएसी) ने मिलकर बनाया है। JF-17 का इस्तेमाल कई तरह की भूमिकाओं के लिए किया जा सकता है। JF-17 थंडर विमान की ड्रॉप टैंकों के साथ उड़ान क्षमता 3,482 किलोमीटर (2,163 मील) है। इसका अधिकतम टेक-ऑफ वजनः 13,500 किलोग्राम है। यह हवा से हवा, हवा से सतह और जहाज रोधी मिसाइलें, निर्देशित और अनिर्देशित बम गिरा सकता है। JF-17 में 23 मिमी जीएसएच-23-2 ट्विन बैरल गन लगी है। JF-17 थंडर की सर्विस सीलिंग 50,000 फीट है।

तुर्की को मुंहतोड़ जवाब देने सुपर राफेल खरीदेगा भारत का दोस्त, एर्दोगन यूरोफाइटर खरीदकर बन रहे थे खलीफा

एजेंसी एथेंस

तुर्की और ग्रीस के बीच आसमान में ताकत बढ़ाने की रेस अब काफी तेज हो गई है। जैसे ही तुर्की ने यूरोपीय यूरोफाइटर जेट खरीदने की तैयारी शुरू की है, ठीक वैसे ही भारत के दोस्त ग्रीस ने भी फ्रांस से सुपर राफेल खरीदने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, ग्रीस, फ्रांस से राफेल F-4 खरीदने पर विचार कर रहा है, जिसका मकसद तुर्की को एक सेकंड के लिए भी आसमान में बढ़त नहीं लेने देना है। ग्रीस के एकाथिमेरिनी की रिपोर्ट के मुताबिक, ग्रीस, F4 कॉन्फिगरेशन में अपग्रेड किए गए अतिरिक्त राफेल में गहरी दिलचस्पी दिखा रहा है। ग्रीस की कोशिश साल 2030 तक तुर्की के खिलाफ आसमान में जबरदस्त बढ़त हासिल करने की है। ग्रीस यह कदम ऐसे समय में उठा रहा है, जब उसका दुश्मन पड़ोसी तुर्की, यूरोफाइटर टाइफून सौदे के करीब पहुंच रहा है। तुर्की की कोशिश लंबी दूरी की Meteor मिसाइलों के साथ यूरोफाइटर को खरीदने की है। ये वही मिसाइल है, जिसे ग्रीस पहले ही अपने राफेल जेट्स में शामिल कर चुका है। दोनों देशों के बीच तनाव का केंद्र एजियन सागर है, जहां दोनों देशों के बीच वायुसीमा, जलसंपदा और सुरक्षा को लेकर दशकों से भारी तनाव बना हुआ है। ग्रीस में भारत से भी लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइलों की खरीद की चर्चा की जा रही है। राफेल लड़ाकू विमान का F4 वैरिएंट ग्रीस के लिए सिर्फ एक अपग्रेड नहीं, बल्कि भविष्य की लड़ाई का खाका है। इस वैरिएंट में लिंक 16 डेटा लिंक और एक स्वदेशी सुरक्षित कम्युनिकेशन नेटवर्क शामिल है जो इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर में ग्रीस को जबरदस्त बढ़त दे सकता है। इसका मतलब है कि राफेल F4 न सिर्फ दूसरे विमानों के साथ रियल-टाइम डेटा शेयर कर सकता है, बल्कि दुश्मन के जैमिंग की कोशिशों को भी नाकाम कर सकता है। राफेल एफ4 में एडवांस AESA रडार और IRST सिस्टम लगाया गया है, जिससे ये फाइटर जेट महाबलशाली बन गया है। AESA रडार अब चलते हुए जमीनी लक्ष्यों को भी लंबी दूरी से ट्रैक कर सकता है, जबकि IRST लो-ऑब्जर्वेबिलिटी यानी स्टेल्थ लक्ष्यों को बिना रेडार उत्सर्जन के पकड़ सकता है। इस अपग्रेड में स्कॉर्पिन हेलमेट माउंटेड डिस्प्ले (HMD) और SPECTRA सेल्फ-प्रोटेक्शन सूट भी जोड़े गए हैं, जिससे विमान की लड़ाकू क्षमता काफी ज्यादा बढ़ गई है।

आर्मेनिया पर अजरबैजान की जीत कश्मीरियों के लिए उम्मीद अजरबैजानी राष्ट्रपति के साथ शहबाज ने उगला जहर, साथ थे मुनीर

एजेंसी बाकू

पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। शहबाज शरीफ इस वक्त अजरबैजान के दौरे पर हैं, जहां उन्होंने भारत और कश्मीर के खिलाफ जहर उगला है। अब अजरबैजान पहुंचकर शहबाज शरीफ ने आर्मेनिया के खिलाफ लड़ाई में मिली जीत को कश्मीर और फिलीस्तीन से जोड़ा है। ये वही पाकिस्तान है, जो गाजा में इजरायल और अमेरिका के कहने पर पाकिस्तानी सैनिकों को हमास से लड़ने भेज रहा है। वहीं, अजरबैजान ने इस मौके पर पाकिस्तान की क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए सराहना की है। दरअसल, प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ अपने फील्ड मार्शल जिहादी असीम मुनीर के साथ अजरबैजान के विजय दिवस समारोह में भाग लेने के लिए दो दिनों के बाकू दौरे पर पहुंचे हैं, जहां उन्होंने भारत के खिलाफ जहरीले बोल बोले हैं। इस दौरान अजरबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलीयेव ने प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से मुलाकात के दौरान दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय

स्थिरता को बढ़ावा देने में पाकिस्तान की भूमिका की सराहना की। वही पाकिस्तान, जो कई दशकों से भारत में आतंकवादियों को भेजता रहा है। शुक्रवार को बाकू स्थित राष्ट्रपति भवन में अजरबैजान और पाकिस्तान के नेताओं के बैठक का आयोजन किया गया था। इस दौरान वहां पाकिस्तानी सेना के प्रमुख फील्ड मार्शल जिहादी असीम मुनीर भी मौजूद थे। इस दौरान राष्ट्रपति इल्हाम अलीयेव ने आर्मेनिया के काराबाग क्षेत्र पर कब्जे में अजरबैजान की मदद करने के लिए पाकिस्तान का धन्यवाद किया। वहीं, पाकिस्तान के विदेश कार्यालय की तरफ से जारी एक बयान के मुताबिक, शहबाज शरीफ अजरबैजान के कथित विजय दिवस की पांचवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में भाग लेंगे। बैठक के दौरान शहबाज शरीफ ने कहा कि "आर्मेनिया के खिलाफ अजरबैजान की जीत आत्मनिर्णय के लिए संघर्ष कर रहे उत्पीड़ित लोगों के लिए आशा की किरण है, जिसमें भारत द्वारा अवैध रूप से अधिकृत जम्मू और कश्मीर और फिलीस्तीन के लोग भी शामिल हैं।" शहबाज शरीफ ने विजय दिवस पर अजरबैजान की सरकार और जनता को बधाई दी, जो आर्मेनिया के खिलाफ 44 दिनों तक चले काराबाख युद्ध को लेकर मनाया जाता है।

तालिबान ने खोला पाकिस्तानी सेना का 20 साल का कच्चा चिट्ठा, सबूत के साथ बताया- TTP का कैसे हुआ जन्म

एजेंसी काबुल

पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज तालिबान के बीच तुर्की में दो दिन चली शांति वार्ता असफल हो गई है। फिलहाल दोनों पक्षों ने अगले दौर की वार्ता में नहीं जाने का फैसला लिया है। दोनों पक्षों में गतिरोध की बड़ी वजह तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) है। पाकिस्तान की ओर से कहा जा रहा है कि टीटीपी को अफगानिस्तान में पनाह मिल रही है, जो उसके सैनिकों पर हमले कर रहा है। पाकिस्तान के आरोपों पर अफगान तालिबान के प्रवक्ता जबीउल्लाह मुजाहिद ने अपनी सरकार का पक्ष रखते हुए पाकिस्तान सरकार और सेना को घेरा है। तालिबान ने सिलसिलेवार ढंग से सबूत देते हुए ये साबित करने की कोशिश की है कि टीटीपी की ताकत बढ़ने का उनके सत्ता में आने से कोई संबंध नहीं है। इसके उलट टीटीपी को पैदा करने के पीछे खुद पाक आर्मी है। मुजाहिद की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि तुर्की में हुई वार्ता के घटनाक्रम के बीच हम तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) से जुड़ी कई बातों को साफ करना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'पाकिस्तान में कुछ सैन्य तत्व अफगानिस्तान में मजबूत सरकार को अपने हितों के खिलाफ मानते हैं। वर्षों से उन्होंने अफगानिस्तान की अस्थिरता का फायदा उठाया है। एक बार फिर वे टीटीपी पर मनगढ़ंत बहाने बनाकर तनाव पैदा करने पर आमादा हैं।' मुजाहिद ने आगे कहा, 'अफगानिस्तान पर झूठे आरोप लगाते हुए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने यह धारणा पेश की गई है कि पाकिस्तान में अस्थिरता और टीटीपी का उदय अफगानिस्तान में तालिबान सरकार आने के साथ शुरू हुआ। हकीकत यह है कि टीटीपी का उदय 2002 में हुआ था, जो पाकिस्तानी सेना की गलत नीतियों का परिणाम है।' तालिबान प्रवक्ता ने कहा कि हम पाकिस्तानी सेना और पश्तून जनजातियों के बीच अतीत में हुए टकरावों को याद दिलाना चाहते हैं, जिससे पता चलता है कि टीटीपी के मुद्दे से तालिबान के सरकार में आने से कोई लेना-देना नहीं है। सच्चाई यह है कि टीटीपी का उदय 2002 में पाकिस्तानी सेना और अमेरिका की ओर से वजीरिस्तान में ड्रोन हमले और हवाई बमबारी के जवाब में हुआ। तालिबान ने स्पष्टतौर पर कहा है कि मार्च 2002 में पाकिस्तानी सेना ने दक्षिण वजीरिस्तान, उत्तरी वजीरिस्तान और ओरकजई में टीटीपी के खिलाफ अपना पहला अभियान ऑपरेशन अल-मिजान शुरू किया। इसके बाद भी पाक आर्मी का लोगों पर अत्याचार जारी रहा। वहीं टीटीपी भी पाकिस्तानी सेना और सरकार को निशाना बनाता रहा। इसमें तालिबान तो कहीं भी शामिल नहीं था। मुजाहिद ने कहा कि दस्तावेजी तथ्यों से पता चलता है कि तालिबान के आने से बहुत पहले ही पाकिस्तानी सेना पश्तून कबीलों और टीटीपी से लड़ रही थी। उन्होंने खुद स्वीकार किया कि आतंकवाद के खिलाफ तथाकथित लड़ाई में 80,000-90,000 सैन्यकर्मी और नागरिक मारे गए। इससे जाहिर होता है कि यह समस्या पाकिस्तान की अपनी आंतरिक समस्या है, ना कि तालिबान इसकी वजह है। तालिबान प्रवक्ता ने अगस्त 2007 में टीटीपी के हमले और उनके 300 पाकिस्तानी सैनिकों को पकड़ने और 2008 में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में हमले का उदाहरण दिया है। इसके बाद 2009, 2010 और 2011 के हमलों का जिक्र भी तालिबान ने किया है, जब टीटीपी ने पाक सेना को भारी नुकसान किया। ये सब बताते हुए तालिबान ने बताया है कि टीटीपी की समस्या उनकी वजह से नहीं है।

5 भारतीयों का अपहरण, राजधानी पर अलकायदा से जुड़े गुट की घेराबंदी, अफ्रीकी देश माली में आखिर चल क्या रहा है

एजेंसी बमाको

अफ्रीकी देश माली में हिंसा और उथलपुथल बढ़ती जा रही है। खासतौर से अल कायदा से जुड़े जमात नुसरत अल-इस्लाम अल-मुस्लिमीन (जेएनआईएम) की बढ़ती ताकत सरकार के सामने चुनौती बन रही है। जेएनआईएम लड़ाकों ने राजधानी बमाको की घेराबंदी करते हुए आर्थिक दबाव बढ़ाया है। इससे माली में सुरक्षा संकट तेजी से बिगड़ रहा है। इस बीच भारत की चिंता खासतौर से बढ़ गई है क्योंकि यहां पांच भारतीय कामगारों का अपहरण किया गया है। फर्स्टपोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, देश के पश्चिमी भाग में कोबरी के पास गुरुवार को अज्ञात बंदूकधारियों ने पांच भारतीय नागरिकों को अगवा कर लिया। अपहरण के बाद इस कंपनी से जुड़े बाकी भारतीय कर्मचारियों को सुरक्षा के लिए बमाको भेज दिया गया। कंपनी के प्रतिनिधि ने कहा कि तत्काल सुरक्षात्मक उपाय किए जाने की जरूरत है। भारतीयों के अपहरण की किसी सशस्त्र समूह ने अभी तक जिम्मेदारी नहीं ली है। अपहरणकर्ताओं की मांगों के बारे में भी कोई विवरण सामने नहीं आ सका है। अपहरण की यह घटना माली में हालिया दिनों में तेजी से देखे गए एक पैटर्न से मेल खाती है। यहां सशस्त्र समूहों ने फिरौती के लिए लगातार विदेशी

नागरिकों को निशाना बनाया है। हालिया वर्षों में माली के मध्य और उत्तरी क्षेत्रों में सक्रिय उग्रवादी गुटों ने विभिन्न देशों के सहायता कर्मियों, राजनयिकों और नागरिकों के अपहरण किए हैं। यह अपहरण ऐसे क्षेत्रों में हो रहे हैं, जहां वर्षों से चल रहे विद्रोही विस्तार और स्थानीय सशस्त्र संघर्षों के कारण देश की सुरक्षा प्रदान करने की क्षमता कमजोर हो गई है। माली में बिगड़ती सुरक्षा स्थिति अल कायदा से संबद्ध सशस्त्र गुटों के गठबंधन जमात नुसरत अल-इस्लाम वल-मुस्लिमीन (जेएनआईएम) के उभार से जुड़ी है।जेएनआईएम साल 2017 में कई मिलिशिया और वैचारिक धाराओं के विलय से बना। इनमें अल्जीरिया स्थित अल कायदा इन द इस्लामिक मगरेब (एक्यूआईएम), अंसार दीन, अल-मुराबितुन और मसीना समूह शामिल हैं। इन समूहों के नेताओं ने माली और विदेशी ताकतों के खिलाफ अपने परिचालन समन्वय को मजबूत करने और साहेल क्षेत्र में प्रभाव का विस्तार करने पर जोर दिया है। जेएनआईएम का विस्तार 2012 में देश के उत्तरी भाग में भड़के सशस्त्र विद्रोह के बाद से माली के संघर्ष की गतिशीलता में व्यापक रुझानों को दर्शाता है। समूह के नेता इयाद अग-घाली की माली में बड़ी भूमिका है।बीते कुछ महीनों में माली की सुरक्षा स्थिति में नाटकीय बदलाव आया है। इसकी वजह जेएनआईएम लड़ाकों के बमाको की ओर जाने वाले प्रमुख ईंधन आपूर्ति मार्गों की नाकाबंदी कर देना है। बमाको की सेनेगल और आइवरी कोस्ट से सड़क मार्ग से आयातित ईंधन पर निर्भरका है। जेएनआईएम के लड़ाकों ने तेल टैंकरों को राजधानी तक पहुंचने से रोक दिया है। जेएनआईएम ने यह नाकाबंदी तब शुरू की, जब सैन्य अधिकारियों ने आतंकवादी अभियानों को बाधित करने के प्रयासों के तहत ग्रामीण इलाकों में अनौपचारिक ईंधन बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया। नाकेबंदी के कारण बमाको में ईंधन की उपलब्धता चरमरा गई है। ईंधन की कमी ने पहले से मौजूद बिजली की चुनौतियों को बढ़ा दिया है, जिससे बिजली कटौती की समस्या और बढ़ गई है।

भारत में मेरा परिवार रहता है, खोज कर दिखाओ पाकिस्तान ने बोला झूठ तो तालिबान के सबसे बड़े दुश्मन ने लगाई फटकार, दी चुनौती

एजेंसी काबुल

अफगानिस्तान के पूर्व उप-राष्ट्रपति अमरुल्लाह सालेह ने पाकिस्तान पर करारा हमला बोला है। उन्होंने पाकिस्तान के झूठे आरोपों और कमजोर खुफिया तंत्र को तगड़ी चुनौती दी है। दरअसल पाकिस्तान के विशेष प्रतिनिधि आसिफ दुर्रानी ने एक इंटरव्यू में दावा किया था कि अमरुल्लाह सालेह का परिवार भारत में रह रहा है। सालेह ने इस दावे को पूरी तरह मनगढ़ंत और हास्यास्पद बताते हुए चुनौती दी है, कि पाकिस्तान की समस्या उसकी अपनी नाकामी और गफलत में है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा है कि "अगर पाकिस्तान जागरूक और सतर्क होता, तो आज उसकी स्थिति इतनी खराब न होती।" सालेह ने दुर्रानी को खुली चुनौती दी कि "अगर वे उनके किसी भी रिश्तेदार, गांव के व्यक्ति, सहकर्मी या यहां तक कि किसी दूर के पंजशिरी संबंधी के बारे में साबित कर दें कि वो भारत में रह रहा है तो वे उन्हें इनाम देंगे।" अमरुल्लाह सालेह ने कहा कि "मुझे नहीं पता कि अमेरिकियों ने एबटाबाद में ओसामा बिन लादेन का पता लगाने के लिए डॉ. अफरीदी को कितनी रकम दी थी, एक रकम बताएं और मुझे बताएं। खैर, सच तो यह है कि दुर्रानी का बयान पूरी तरह से निराधार है। यह निराधार दावा मुझे 1995 या 1996 की एक अनकही कहानी की याद दिलाता है, जब राष्ट्रीय नायक और शहीद अहमद शाह मसूद ने पाकिस्तान के विदेश मंत्री सरदार आसिफ अहमद खान दुल्ला से मुलाकात की थी। मंत्री ने जोर देकर कहा कि इस्लामाबाद प्रोफेसर बुरहानुद्दीन रब्बानी की मुजाहिदीन सरकार का विरोध इसलिए कर रहा है क्योंकि बगराम एयरबेस पर भारतीय सलाहकार और सैन्यकर्मी तैनात हैं। शहीद अहमद शाह मसूद ने साफ किया कि यह दावा झूठा है, लेकिन मंत्री सरदार आसिफ अड़े रहे और उन्होंने जोर देकर कहा कि आईएसआई की खुफिया जानकारी सटीक है और उसे मुजाहिदीन की गहरी जानकारी है।" सालेह ने आगे लिखा है कि "बैठक का अंत सुखद नहीं रहा। मंत्री सरदार आसिफ के अनुरोध पर, मसूद के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होकर उनकी एक तस्वीर ली जानी थी। वहां मौजूद एक आईएसआई अधिकारी को इस पल को कैद करने का काम सौंपा गया था। कई बार शटर दबाने के बाद, उसे एहसास हुआ कि उसके कैमरे में फिल्म ही नहीं है। अपनी चिरपरिचित मुस्कान के साथ, राष्ट्रीय नायक सरदार आसिफ की ओर मुड़े और बोलेः "आप अपनी खुफिया जानकारी के लिए इन लोगों पर भरोसा करते हैं, ऐसे लोग जिन्हें यह भी नहीं पता कि उनके अपने कैमरे में क्या है, बगराम एयरबेस के अंदर की तो बात ही छोड़ दीजिए।" सालेह ने कहा कि "भारत एक बेहद सम्मानित देश है, महान, गहरा और अटल, जिसके साथ मैंने सौहार्दपूर्ण व्यावसायिक और राजनीतिक संबंध बनाए रखे हैं। लेकिन मेरे परिवार के बारे में दुर्रानी का दावा बिल्कुल निराधार है।" उन्होंने दोहराया कि पाकिस्तान के आरोप "न सिर्फ बेबुनियाद हैं, बल्कि जानबूझकर झूठ फैलाने की कोशिश" हैं। सालेह ने कहा, "पाकिस्तान अपनी हर नाकामी का दोष दूसरों पर डालने की आदत से बाहर नहीं आ पा रहा। उसे दूसरों पर आरोप लगाने से पहले अपने हालात पर नजर डालनी चाहिए।"

भारतीय फुटबॉल पर बड़ा संकट, ISL के लिए फाइनेंसर नहीं तलाश पाया AIFF, प्लेयर्स और क्लब भी मुश्किल में

एजेंसी गोवा

भारतीय फुटबॉल के सामने उसका सबसे बड़ा संकट खड़ा हो गया है। ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन (AIFF) अपनी प्रीमियम टूर्नामेंट इंडियन सुपर लीग (ISL) के लिए कॉमर्शियल पार्टनर तलाशने में फेल हो गया है। एआईएफएफ ने ISL के लिए रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल जमा कराने के लिए शुक्रवार (7 नवंबर) की तारीख तय की थी, लेकिन नेशनल फेडरेशन के ऑफर पर किसी ने भी बोली जमा नहीं की है। इससे देश की इस टॉप फुटबॉल लीग के फ्यूचर पर संकट खड़ा हो गया है। एआईएफएफ को टूर्नामेंट का फंड जुटाने के लिए दूसरे तरीके से इन्वेस्टर तलाशने पर सोचना शुरू कर दिया है, क्योंकि मौजूदा कॉमर्शियल राइट्स होल्डर फुटबॉल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट लिमिटेड (FSDL) का कांट्रेक्ट 8 दिसंबर को खत्म होने जा रहा है और इसमें एक महीने से भी कम समय बचा हुआ है। Reliance समूह की कंपनी FSDL ने भी इस कॉन्ट्रेक्ट को आगे बढ़ाने में दिलचस्पी दिखाई थी, लेकिन फिर पीछे हट गई। इससे भारतीय फुटबॉल क्लबों और खिलाड़ियों के लिए भी संकट पैदा हो गया है, जिन्हें मोटा आर्थिक झटका लग सकता है। एआईएफएफ को सुप्रीम कोर्ट से नए संविधान के लिए सितंबर में हरी झंडी मिली थी। इसके बाद अक्तूबर में फेडरेशन ने टेंडर जारी किया था, जिसमें अगले 15 साल के लिए ISL का कॉमर्शियल पार्टनर बनने के लिए RFP मांगा गया था। इसके बाद FanCode, RAAK Group और स्लोवेकिया में बिजनेस वाले मोनाको स्थित बिजनेस समूह समेत कुछ कंपनियों ने दिलचस्पी भी दिखाई थी और कुछ जानकारियां भी फेडरेशन से मांगी थी। पिछले महीने के अंत में फेडरेशन ने सारे सवालों का जवाब भी दे दिया था, लेकिन इसके बावजूद एआईएफएफ को कोई बोलीदाता नहीं मिला। फेडरेशन ने आईएसएल के प्रॉडक्शन, मार्केटिंग और ब्रॉडकास्टिंग राइट्स समेत अन्य सुविधाओं के अलावा 37.5 करोड़ रुपये या रेवेन्यू में 5% हिस्से में से जो ज्यादा हो, वो हर साल फेडरेशन को देने की मांग रखी थी, लेकिन किसी ने भी इस कीमत पर बोली नहीं लगाई है। एआईएफएफ ने एक बयान में इसकी जानकारी दी है। साथ ही कहा है कि अब बिड इवेल्यूएशन कमेटी रिव्यू करने के बाद आगे का कदम तय करेगी, जिसकी अध्यक्षता जस्टिस एलएन राव कर रहे हैं। इस कमेटी में एआईएफएफ अध्यक्ष कल्याण चौबे भी मेंबर हैं। एक अधिकारी के हवाले से कहा गया है कि फेडरेशन लीग का सारा कंट्रोल अपने पास रखना चाहता है, जबकि फाइनेंसर से उम्मीद कर रहा है कि वो सारा वित्तीय बोझ उठाए। इसके लिए एक गवर्निंग काउंसिल का गठन किया जाएगा, जिसमें छह प्रतिनिधि होंगे। इनमें दो एआईएफएफ की तरफ से होंगे और उनके पास वीटो वोट होगा, जबकि उसके मार्केटिंग पार्टनर यानी फाइनेंसर के पास केवल एक वीटो वोट होगा यानी फेडरेशन के ही सारे फैसले काउंसिल में चलेंगे। अधिकारी ने कहा,'एआईएफएफ सब तरह का संचालन कंट्रोल करना चाहता है। इसमें विज्ञापनों पर कंट्रोल भी शामिल है। ऐसी व्यवस्था में कौन इन्वेस्टमेंट के लिए आगे आएगा।' लीग के इस सीजन की शुरुआत 13 सितंबर से होनी थी, लेकिन इसे टालकर दिसंबर में किया गया। इससे यह भी संशय पैदा हो गया है कि क्या कॉन्टिनेंटल लाइसेंस के लिए घरेलू और दूसरे वेन्यू पर कुल 24 लीग मैच कराने की अनिवार्य शर्त को पूरा करने का पर्याप्त समय मिल पाएगा।

इंटरनेशनल क्रिकेट में एक ही मैच में डेब्यू... बाप-बेटे की जोड़ी ने इतिहास रच डाला, पहली बार हुआ ऐसा कारनामा

एजेंसी नई दिल्ली

सुहैल सत्तार और उनके बेटे याह्या सत्तार ने क्रिकेट के इतिहास में एक अनोखा कीर्तिमान स्थापित किया है। वे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में एक साथ खेलने वाले पहले पिता-पुत्र की जोड़ी बन गए हैं। यह ऐतिहासिक पल 6 नवंबर को इंडोनेशिया के बाली में तब आया जब तिमोर-लेस्ते ने अपना पहला अंतरराष्ट्रीय मैच खेला। इस मैच में पिता सुहैल सत्तार (50 वर्ष) और बेटे याह्या सत्तार (17 वर्ष) ने एक साथ मैदान पर कदम रखा। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पिता-पुत्र की जोड़ी का एक साथ खेलना पहली बार नहीं हुआ है। इससे पहले स्विट्जरलैंड की महिला क्रिकेट टीम में भी ऐसी ही एक मिसाल देखने को मिली थी। इस साल मेट्टी फर्नांडीस और उनकी बेटी नैना मेट्टी राजू ने छह टी20 आई मैच एक साथ खेले थे। यह दिखाता है कि खेल के मैदान पर परिवार के सदस्यों का एक साथ आना कोई नई बात नहीं है, लेकिन पिता-पुत्र की जोड़ी का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक साथ खेलना निश्चित रूप से एक खास उपलब्धि है। घरेलू क्रिकेट में भी पिता-पुत्र की जोड़ियों के एक साथ खेलने या एक-दूसरे के खिलाफ खेलने के कई उदाहरण मौजूद हैं। वेस्टइंडीज के पूर्व दिग्गज शिवनारायण चंद्रपॉल और उनके बेटे तेगनारिन चंद्रपॉल ने गुयाना के लिए 11 प्रथम श्रेणी मैच एक साथ खेले। इतना ही नहीं, मार्च 2014 में प्रोविडेंस स्टेडियम में विंडवर्ड आइलैंड्स के खिलाफ खेले गए एक मैच में शिवनारायण ने अपने बेटे को कप्तानी भी सौंपी थी। यह एक ऐसा पल रहा होगा जो पिता के लिए गर्व और बेटे के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा होगा। हाल ही में, 2025 के शपागीजा क्रिकेट लीग के फाइनल में अफगानिस्तान के मोहम्मद नबी अपने बेटे हसन ईसाखाइल के खिलाफ खेलते हुए नजर आए। यह मुकाबला पिता और पुत्र के बीच एक रोमांचक जंग का गवाह बना, जिसने क्रिकेट प्रेमियों का ध्यान खींचा। ऐसे मुकाबले खेल की दुनिया में एक अलग ही रंग भर देते हैं। तिमोर-लेस्ते की टीम के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की शुरुआत कुछ खास नहीं रही है। अपने पहले तीन मैचों में उन्हें लगातार दस विकेट से हार का सामना करना पड़ा है। यह दिखाता है कि टीम को अभी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने के लिए काफी मेहनत करनी होगी।

शतक के बाद शतक... ध्रुव जुरेल ने इंडिया ए के लिए रचा इतिहास, ऋषभ पंत का सिरदर्द बढ़ा

एजेंसी बेंगलुरु

युवा भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ध्रुव जुरेल का बल्ला रुकने का नाम नहीं ले रहा है। उनके बैट से नहीं की बरसात होती ही जा रही है। वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज में ऋषभ पंत की चोट के कारण उन्हें खेलने का मौका मिला। जुरेल ने शतक ठोक दिया। अब साउथ अफ्रीका ए के खिलाफ दूसरे अनाधिकारिक टेस्ट मैच की पहली पारी में मुश्किल परिस्थिति में जुरेल ने शतक लगाया था। अब दूसरे पारी में भी उनके बल्ले से शतक निकल गया है। नमन ओझा के बाद जुरेल इंडिया ए के लिए दोनों पारियों में शतक लगाने वाले सिर्फ दूसरे बल्लेबाज हैं। बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ग्राउंड पर खेले जा रहे मुकाबले की दूसरी पारी में ध्रुव जुरेल ने 127 रन ठोके। वह 7वें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे। वह समय भारतीय टीम मुश्किल में नजर आ रही थी। 116 रन पर 5 विकेट गिर चुके थे। वहां से जुरेल ने पारी को संभाला। 159 गेंदों पर उन्होंने अपना शतक पूरा किया। 24 साल दाएं हाथ के बल्लेबाज का यह फर्स्ट क्लास क्रिकेट में 5वां शतक है। 127 रन बनाने के लिए ध्रुव जुरेल ने 170 गेंदों का सामना किया। अपनी पारी में उन्होंने 15 चौके और एक छक्का लगाया। वह आउट नहीं हुए। इंडिया ए ने 7 विकेट पर 382 रन बनाकर अपनी पारी घोषित कर दी। ऋषभ पंत के खुद आउट होते ही पारी घोषित करने का फैसला किया। पंत ने 54 गेंद पर 65 रनों की पारी खेली। वह तीन बार गेंद लगने की वजह से रिटायर्ड हर्ट हो गए थे। पंत का टेस्ट में रिकॉर्ड शानदार है लेकिन ध्रुव जुरेल की ऐसे बैटिंग से ऊपर भी प्रेशर बनेगा। साउथ अफ्रीका के सामने 417 रनों का लक्ष्य इंडिया ए ने मुकाबला जीतने के लिए साउथ अफ्रीका ए को 417 रनों का लक्ष्य दिया है। पहली पारी में ध्रुव जुरेल के नाम 132 रनों की मदद से भारत ने 255 रन बनाए थे। साउथ अफ्रीका ए की पारी 221 रनों पर ही सिमट गई। पहली पारी में 34 रनों की बढ़त मिलने के बाद दूसरी पारी में इंडिया ने 382 रन बोर्ड पर टांग दिए। चार दिवसीय मैच का आज तीसरा ही दिन है। दो मैचों की इस सीरीज के पहले मैच को इंडिया ए ने अपने नाम किया था।

रोहित शर्मा ने शुरू की तैयारी, विराट कोहली का क्या हाल, एक साथ फिर कब दिखेंगे मैदान पर

एजेंसी नई दिल्ली

विराट कोहली और रोहित शर्मा 25 अक्टूबर से मैदान से दूर हैं। इन दोनों पूर्व कप्तानों ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज में आखिरी बार खेला था और तब से कोई भी प्रतिस्पर्धी क्रिकेट नहीं खेला है। वे फिलहाल सिर्फ वनडे क्रिकेट ही खेल रहे हैं और रणजी ट्रॉफी में हिस्सा नहीं ले रहे हैं। फैंस इन दोनों दिग्गजों को मैदान पर वापसी करते देखने के लिए बेताब हैं। रोहित शर्मा दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आगामी वनडे सीरीज की तैयारी के लिए मुंबई के एम सी ए-बी के सी ग्राउंड पर अभ्यास करते नजर आए। उन्होंने करीब तीस मिनट तक हल्की ट्रेनिंग और स्प्रिंट लगाए लेकिन नेट पर बल्लेबाजी नहीं की। इस दौरान उन्होंने मुंबई के कुछ क्रिकेटरों से बातचीत की और अपने पुराने दोस्त, धवल कुलकर्णी और अतुल रानाडे से भी मिले। रोहित शर्मा जो अब सिर्फ वनडे क्रिकेट खेलते हैं और 2027 के वनडे विश्व कप तक खेलने की उम्मीद रखते हैं इस अभ्यास के जरिए अपनी फॉर्म को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि विराट कोहली की तैयारी की अबतक कोई खबर सामने नहीं आई है। यह दोनों दिग्गज खिलाड़ी दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ होने वाली वनडे सीरीज में टीम इंडिया के लिए मैदान पर वापसी करेंगे। दक्षिण अफ्रीका की टीम 14 नवंबर से 19 दिसंबर तक भारत का दौरा करेगी। इस दौरे में 2 टेस्ट, 3 वनडे और 5 टी20 मैच खेले जाएंगे। सीरीज की शुरुआत टेस्ट मैचों से होगी और अंत टी20 सीरीज से। तीन वनडे मैच 30 नवंबर, 3 दिसंबर और 6 दिसंबर को खेले जाएंगे। विराट और रोहित दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत दौरे पर इन तीनों वनडे मैचों में खेलते हुए नजर आएंगे। इसके अलावा, विराट और रोहित 2026 की शुरुआत में भारत में न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन वनडे मैच भी खेलेंगे। यह सीरीज 2026 टी20 वर्ल्ड कप से पहले खेली जाएगी। ये तीन वनडे मैच 11 जनवरी, 14 जनवरी और 18 जनवरी को खेले जाएंगे। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पिछली वनडे सीरीज में विराट कोहली का प्रदर्शन मिला-जुला रहा था। सीरीज के पहले दो वनडे मैचों में वे लगातार दो बार शून्य पर आउट हुए थे। हालांकि, तीसरे वनडे में उन्होंने वापसी की और 237 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए 74 रन की नाबाद पारी खेली। रोहित शर्मा का बल्ला भी चला था और उन्होंने तीन मैचों की सीरीज में कुल 202 रन बनाए थे। वे सीरीज में 150 से ज्यादा रन बनाने वाले एकमात्र बल्लेबाज थे। तीसरे वनडे में उन्होंने 125 गेंदों पर 121 रन की नाबाद शतकीय पारी खेली थी।

व्यापार

भारत की तिजोरी पर 'डबल अटैक'... सरकार की बढ़ी टेंशन, गणित बदलने का कसूरवार कौन

एजेंसी नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय बाजार में चल रही उथल-पुथल ने भारत की वित्तीय स्थिरता के लिए नई चुनौती खड़ी कर दी है। एक तरफ, रूस समेत ओपेक+ देशों की ओर से कच्चे तेल के उत्पादन पर 'पॉज' (रोक) लगाए जाने से तेल की कीमतों में उछाल का डर है। वहीं, दूसरी ओर ग्लोबल मंदी के डर और फेडरल रिजर्व के मौद्रिक फैसलों के कारण सोने-चांदी जैसी सुरक्षित संपत्तियों में नई तेजी की भविष्यवाणी होने लगी है। इससे देश का आयात बिल बेतहाशा बढ़ सकता है। कारण है कि तेल के साथ सोने-चांदी का भारत बहुत बड़ा उपभोक्ता है। इससे 2026 की शुरुआत में भारत महंगाई भड़क सकती है। यह 'डबल अटैक' भारतीय नीति निर्माताओं और आम जनता दोनों के लिए गंभीर चिंता का विषय है। ऑस्ट्रेलिया-ट्रेडिंग.कॉम के सीईओ पीटर मैकगवायर ने कहा है कि ग्लोबल कमोडिटी बाजार में उतार-चढ़ाव का दौर जारी रहेगा। इसकी वजह ओपेक+ का उत्पादन बढ़ोतरी रोकना और अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ब्याज दर नीति है, जो निवेशकों को चिंतित कर रही है। फेड की ब्याज दरें कम होने पर 2026 की शुरुआत में सोने और चांदी की कीमतें बढ़ सकती हैं। ओपेक+ ने दिसंबर में उत्पादन टारगेट थोड़ा बढ़ाकर बाजारों को चौंका दिया था। लेकिन, 2026 की पहली तिमाही में यह समूह सावधानी बरतेगा। दूसरी तिमाही तक, समूह कीमतों को स्थिर रखने और बाजार हिस्सेदारी बनाए रखने के बीच संतुलन बनाते हुए उत्पादन को लेकर नए फैसले ले सकता है। वैश्विक मांग, अमेरिकी डॉलर की चाल और टैरिफ (आयात शुल्क) से जुड़े घटनाक्रम तेल की कीमतों को प्रभावित करने वाले मुख्य फैक्टर बने रहेंगे। भारत के लिए ओपेक+ देशों की ओर से उत्पादन पर 'पॉज' कई तरह से महत्वपूर्ण है। ओपेक+ प्रमुख तेल उत्पादक देशों का समूह है। इसमें रूस, सऊदी अरब समेत 22 देश शामिल हैं। इसका तेल उत्पादन को बढ़ाने की योजना पर रोक लगा देना या उसे सीमित कर देना सीधे तौर पर भारत पर असर डालेगा। इससे वैश्विक बाजार में तेल की सप्लाई सीमित रहने के आसार हैं। इससे कीमतें ऊंची बनी रहेंगी या अचानक बढ़ भी सकती हैं। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए तेल आयात पर बहुत ज्यादा निर्भर है। ऊंची तेल कीमतें होने पर आयात बिल बहुत अधिक बढ़ जाएगा। इससे देश का व्यापार घाटा भी बढ़ेगा। साथ ही भारतीय रुपया कमजोर होगा। यह महंगाई को हवा दे सकता है। कारण है कि इससे पेट्रोल, डीजल और दूसरे पेट्रोलियम उत्पादों के महंगे होने की आशंका है। वहीं, दूसरी तरफ वैश्विक मंदी की आशंकाएं बढ़ गई हैं। जब आर्थिक अनिश्चितता बढ़ती है तो निवेशक सोने और चांदी जैसी सुरक्षित संपत्तियों की ओर रुख करते हैं। इससे उनकी मांग और कीमतें तेजी से बढ़ती हैं। तेल की ही तरह भारत दुनिया में सोने के सबसे बड़े आयातकों में है। ऊंची कीमतें होने पर आयात बिल पर फिर से दबाव बढ़ेगा। घरेलू बाजार में महंगाई और बढ़ने की आशंका है। इससे आम आदमी की खरीदने की ताकत घट जाएगी।

बुलबुला या संकट का बीमा, सोने की चकाचौंध पर दिग्गज अर्थशास्त्री की चेतावनी

एजेंसी नई दिल्ली

सोने की कीमतों में इस साल जोरदार तेजी आई है। इंटरनेशनल मार्केट में यह 4,000 डॉलर प्रति औंस से ऊपर चला गया। हालांकि, न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अश्वथ दामोदरन ने इस पर सवाल उठाए हैं। उनका मानना है कि निवेशकों को इसके पीछे के सच को गहराई से समझना चाहिए। दामोदरन के अनुसार, सोना 'स्पष्ट रूप से महंगा' है। उन्होंने अपने एक ब्लॉग पोस्ट में कहा कि 2025 में सोने के दामों में 57% की बढ़ोतरी हुई है। पिछले एक दशक में सोना 1,060 डॉलर से बढ़कर 4,000 डॉलर के पार चला गया है। लेकिन, यह चमक उसके असली गुणों से मेल नहीं खाती। प्रोफेसर दामोदरन ने बताया कि सोने को अक्सर महंगाई और आर्थिक संकट से एक सुरक्षा कवच माना जाता है। लेकिन, इतिहास गवाह है कि यह रिश्ता उतना सीधा नहीं है। उन्होंने समझाया कि शेयर या बॉन्ड की तरह सोना कोई कमाई नहीं करता। इसलिए, यह एक वित्तीय संपत्ति से ज्यादा एक कलेक्टिबल यानी जुटाने वाली वस्तु की तरह है। इसका मूल्य काफी हद तक लोगों की सोच और बाजार के मिजाज पर निर्भर करता है। अपनी बात को पुख्ता करने के लिए दामोदरन ने दो ऐतिहासिक अनुपातों का विश्लेषण किया: गोल्ड-टू-सीपीआई (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक) और गोल्ड-टू-सिल्वर। अक्टूबर 2025 में गोल्ड-टू-सीपीआई रेशियो 17.81 पर पहुंच गया। यह ऐतिहासिक औसत 3 से लगभग छह गुना ज्यादा है। इसी तरह गोल्ड-टू-सिल्वर रेशियो 84.73 था जो इसके ऐतिहासिक औसत 57.09 से काफी ऊपर है। ये दोनों आंकड़े बताते हैं कि सोना शायद अपने ऐतिहासिक मूल्य से बहुत ज्यादा महंगा बिक रहा है। हालांकि, दामोदरन यह भी मानते हैं कि अगर ब्याज दरें लगातार कम बनी रहती हैं और महंगाई भी कम रहती है तो इन औसत अनुपातों में बदलाव आ सकता है। इससे सोने के वैल्यूएशन में भी कुछ हद तक बदलाव होने के आसार हैं। लेकिन, यह बदलाव भी एक सीमा तक ही होगा। प्रोफेसर दामोदरन के अनुसार, सोने की असली कहानी उसके बीमा के तौर पर काम करने में है। उन्होंने लिखा, 'जो निवेशक अपने पोर्टफोलियो में सोने को इसलिए शामिल करते हैं क्योंकि यह सुरक्षा देता है, उन्हें यह समझना चाहिए कि यह किसी बड़ी अनहोनी के लिए बीमा खरीदने जैसा है।' यह बात खासकर उन लोगों के लिए सच है जिनकी दौलत ज्यादातर वित्तीय संपत्तियों में लगी हुई है। दामोदरन का मानना है कि हालिया कीमतों में उछाल शायद असली कारणों से नहीं, बल्कि डर की वजह से आया है। उन्होंने कहा, 'कुछ लोग निश्चित रूप से सही समय पर सही जगह पर होने की वजह से भाग्यशाली रहे होंगे। लेकिन, कुछ लोग बाजार के बदलते मिजाज को पहले ही भांप गए थे, खासकर 2025 में।' उन्होंने यह भी कहा, 'अगर जेमी डिमोन और रे डेलियो सचमुच कहते हैं कि बाजार एक बुलबुला है तो क्या उनके लिए सोना रखना समझदारी नहीं होगी?' यह सवाल सोने की मांग और उसके पीछे की भावनाओं को समझने में मदद करता है। यानी जब बड़े निवेशक भी बाजार में अनिश्चितता देखते हैं तो वे सोने की ओर रुख कर सकते हैं, भले ही उसके दाम बहुत ज्यादा हों। यह सोने को एक तरह का 'डर का प्रीमियम' दिलाता है।

बैंक खाते में 50 लाख का बैलेंस कुछ नहीं है: CA ने बता दिया असली 'धन' का मतलब

एजेंसी नई दिल्ली

आजकल लोग सोशल मीडिया पर अपनी दौलत का दिखावा करते हैं और इसे ही असली अमीरी मानते हैं। लेकिन चार्टर्ड अकाउंटेंट नितिन कौशिक ने इस सोच को बिल्कुल बदल दिया है। उन्होंने बताया कि असली दौलत क्या होती है, और यह सिर्फ बैंक में रखे पैसों से कहीं बढ़कर है। नितिन कौशिक के मुताबिक, असली अमीरी का मतलब है मन की शांति। उन्होंने X (पहले ट्विटर) पर अपनी पोस्ट्स में यह बात साफ की। उनका कहना है कि अगर आपके पास 50 लाख बैंक में हैं, लेकिन आप चैन की नींद नहीं सो पाते, तो उस पैसे का कोई मतलब नहीं। असली दौलत वह है जो आपको सुकून दे। कौशिक ने समझाया कि पैसे बचाने, बजट बनाने और निवेश करने जैसी आदतें लालच से नहीं, बल्कि आजादी पाने के लिए होती हैं। उनके लिए, 'Financial freedom = mental freedom' यानी पैसों की आजादी ही दिमाग की आजादी है। वे मानते हैं कि दौलत का असली मकसद दिखावा करना नहीं, बल्कि मन को शांत और सुरक्षित रखना है। एक और पोस्ट में, कौशिक ने 'Financially Mature' यानी आर्थिक रूप से समझदार लोगों की आदतें बताईं। उन्होंने कहा कि असली दौलत सिर्फ आपकी कमाई या संपत्ति से नहीं मापी जाती, बल्कि आप उसे कैसे संभालते हैं, इससे पता चलती है। जो लोग शांत और अनुशासित रहते हैं, वही असल में अमीर होते हैं।

1. अपनी वित्तीय जीत का दिखावा नहीं करते: कौशिक कहते हैं, 'असली निवेशक कंपाउंडिंग को बोलने देते हैं, कैप्शन को नहीं।' इसका मतलब है कि आपकी तरक्की खुद बोलती है, उसे बताने की जरूरत नहीं पड़ती।
2. अपने वित्तीय मानकों को सही नहीं ठहराते: वे कहते हैं, 'आपको किसी को यह बताने की जरूरत नहीं है कि आप गलत पैसों की आदतों को क्यों मना कर रहे हैं।' अपनी वित्तीय सोच पर टिके रहना जरूरी है।
3. लक्जरी चीजों का दिखावा नहीं करते: कौशिक के अनुसार, 'असली दौलत ध्यान नहीं, सुकून खरीदती है।' इसका मतलब है कि जो लोग सचमुच अमीर होते हैं, वे दिखावा करके लोगों का ध्यान खींचने की कोशिश नहीं करते।

सुबह उठते ही बोलें ये चमत्कारी मंत्र, मिलेगी मां लक्ष्मी और भगवान विष्णु की अपार कृपा, धन-संपत्ति में होगा वृद्धि

हिंदू धर्म ग्रंथों में कहा गया है कि सुबह का समय ईश्वर साधना और मंत्र जाप के लिए सबसे शुभ होता है। यह समय ब्रह्म मुहूर्त कहलाता है, सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर होता है। धार्मिक मान्यता है कि इस पवित्र समय में मां लक्ष्मी, भगवान विष्णु और कुबेर देव के मंत्रों का जाप करने से जीवन में सुख, शांति और धन की वृद्धि होती है। ऐसा माना जाता है कि स्नान के बाद पूर्व दिशा की ओर मुख करके श्रद्धा और विश्वास से इन मंत्रों का 108 बार जाप करने पर देवी-देवताओं की कृपा शीघ्र प्राप्त होती है। तो चलिए जानते हैं इन खास मंत्रों के बारे में.

मां लक्ष्मी के धनवर्षा मंत्र

ॐ लक्ष्मी नमः

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः

ॐ लक्ष्मी नारायण नमः

ॐ ह्रीं श्री क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धन पूरये, धन पूरये, चिंताएं दूरये-दूरये स्वाहाः

ॐ नमो भाग्य लक्ष्म्यै च विद्महे अष्ट लक्ष्म्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोद्यात

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

ॐ ह्रीं ह्रीं श्री लक्ष्मी वासुदेवाय नमः

भगवान विष्णु के पंचरूप मंत्र

ॐ अं वासुदेवाय नमः

ॐ आं संकर्षणाय नमः

ॐ अं प्रद्युम्नाय नमः

ॐ अः अनिरुद्धाय नमः

ॐ नारायणाय नमः।

लक्ष्मी विनायक मंत्र

दन्ताभये चक्र दरो दधानं, कराग्रगस्वर्णघटं त्रिनेत्रम्।

धृताब्जया लिंगितमब्धिपुत्रया, लक्ष्मी गणेशं कनकाभमीडे।।

कुबेर देव के मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये, धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा॥ – धन-धान्य की वर्षा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं कुबेराय अष्ट-लक्ष्मी मम गृहे धनं पुरय पुरय नमः॥ – घर में अष्ट लक्ष्मी का वास।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः॥ – वित्तेश्वर कुबेर की कृपा।

माघ मेला 2026 में कौन-सा पर्व कब पड़ेगा, माघ मास के पर्वों का महत्व

3 जनवरी 2026, दिन शनिवार, पौष पूर्णिमा, माघ स्नान का शुभारम्भ- पौष पूर्णिमा पर्व का विशेष महत्व शास्त्रों में वर्णित है, इस दिन से माघ मास के पवित्र स्नान का शुभारम्भ हो जाता है। संगम के पवित्र जल में प्राणदायिनी शक्ति विद्यमान है, पौष पूर्णिमा के सुअवसर पर ग्रह नक्षत्रों की विशेष स्थिति, चंद्र आदि ग्रहों के माध्यम से अमृत वर्षा कर स्नान आदि करने वालों को निरोगी काया सहित पुण्य लाभ प्रदान करती है।

15 जनवरी 2026, दिन गुरुवार, मकर संक्रांति- 'मकर संक्रान्ति' भारत के वैदिक कालीन पर्वों में से एक है। सूर्य के राशि परिवर्तन कर मकर राशि में प्रवेश का उत्सव मकर संक्रांति है। धर्मशास्त्रों के अनुसार इस दिन स्नान, पुण्य, दान, जप, धार्मिक अनुष्ठानों का विशेष महत्व है। इस अवसर पर दिया हुआ दान 'पुनर्जन्म' होने पर सौ गुणा होकर प्राप्त होता है।

18 जनवरी 2026, दिन रविवार, मौनी अमावस्या- माघ मास, कृशणपक्ष की अमावस्या, मौनी अमावस्या कहलाती है, मौनी अमावस्या, माघ के महीने का सबसे बड़ा स्नान पर्व है, मौनी अमावस्या का स्नान अन्य सभी स्नान पर्वों में सर्वोत्तम कहा गया है। मौनी अमावस्या के विषेश पुण्यकाल पर स्वयं का उद्धार तथा पितरों को तारने के लिए दान, पुण्य, स्नान का विषेश विधान षास्त्रों में वर्णित है।

23 जनवरी 2026, दिन शुक्रवार, बसंत पंचमी- बसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा के पीछे कई मान्यताएं हैं। इस दिन मां सरस्वती का स्मरण, पूजन एवं मां सरस्वती के नाम से स्नान, दान कर ध्यान करने से अंतःकरण में स्थित सरस्वती जिह्वा पर विराजमान हो जाती हैं।

1 फरवरी 2026, दिन रविवार, माघी पूर्णिमा- माघ मास की पूर्णिमा अर्थात माघी पूर्णिमा माघ स्नान पर्वों की श्रृंखला का अंतिम स्नान पर्व है। वैसे तो हर पूर्णिमा का अपना अलग महत्व होता है, पर माघी पूर्णिमा की बात ही निराली होती है। इस दिन स्नान-ध्यान करने से मनोकामनाएं तो पूर्ण होती ही हैं, साथ ही मोक्ष भी मिलता है।

15 फरवरी 2026, दिन रविवार, महाशिवरात्रि- शिव और शक्ति की समन्वित ऊर्जा महाशिवरात्रि पर भक्तों का कल्याण करती है। मानव शरीर के भीतर शिव और शक्ति दोनों तत्व उपस्थित हैं, इनको एकाकार करने के लिए महाशिवरात्रि पर शिव-पार्वती का स्मरण कर स्नान, ध्यान, पूजन, उपासना, व्रत करना अनिवार्य है।

जिन लोगों के गालों पर होता है तिल, जानिए कैसा होता है उनका व्यक्तित्व और स्वभाव

अगर किसी व्यक्ति के गाल पर तिल है वह बहुत सौभाग्यशाली होता है- सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शरीर पर मौजूद हर एक तिल का खास मतलब होता है। लेकिन शरीर पर मौजूद हर तिल अशुभ नहीं होता है। कुछ तिल शुभ भी होते हैं। वहीं कुछ तिल आपके करियर और भविष्य के बारे में भी बताते हैं। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शरीर पर मौजूद हर एक तिल का खास मतलब होता है। गालों पर तिल होने का खास अर्थ होता है। आज हम आपको बताएंगे गाल पर तिल होने से व्यक्ति का नेचर और व्यवहार कैसा होता है। सामुद्रिक शास्त्र अनुसार जिन लोगों के गाल के बीचों बीच तिल होता है ऐसे लोग बेहद इमोशनल होते हैं। मान्यता कि इन लोगों को हमेशा भाग्य का साथ मिलता है। यह लोग बहुत जल्द दूसरों की बातों में आ जाते हैं। साथ ही यह दूसरों को प्रभावित करने में भी सक्षम होते हैं। इन्हें दूसरों की बातों का जल्दी बुरा लग जाता है। वहीं ये लोग दूरदर्शी होते हैं।

गाल के ऊपरी हिस्से पर तिल होना जिन लोगों के काल के ऊपरी हिस्से पर तिल होता है ऐसे लोग बहुत रचनात्मक और सकारात्मक होते हैं। यदि कोई भी काम सामान्य तरीके से करना पसंद नहीं आता है। यह हर कार्य में अपनी कलात्मकता दिखाना चाहते हैं। इन लोगों के पास धन की कमी नहीं होती है। साथ ही ऐसे लोग अपने परिवार से बहुत ज्यादा जुड़े होते हैं। अपने जीवनसाथी के प्रति भी ऐसे लोग पूरी तरह से समर्पित होते हैं।

दाहिने गाल पर तिल अगर किसी महिला के दाहिने गाल पर तिल है तो ये उनके चेहरे की आकर्षण क्षमता बहुत अच्छी होती है। ऐसी स्त्रियां बहुत ही धनवान होती हैं। इनके पास पैसों की कोई कमी नहीं होती है। साथ ही ये सामाजिक होती हैं। लेकिन इनमें कभी- कभी घमंड आ जाता है।

दोनों गाल पर तिल सामुद्रिक शास्त्र अनुसार दोनों गालों पर तिल होने का मतलब अलग होता है। ऐसे लोग जो एक बार ठान लेते हैं उसे करके ही दम लेते हैं। उन्हें सही रास्ते पर चलना और मेहनत करना अच्छा लगता है। ऐसे लोग अपनी मर्जी के मालिक होते हैं। जिन महिलाओं के दाएं गाल पर तिल होता है, वे लाइफ पार्टनर के मामले में बहुत लकी होती हैं।

आर्थिक राशिफल :अधि योग से मेष, मिथुन का चमकेगा करियर, इन राशियों को मिलेगा राजयोग के समान सुख

मेष राशि के जातकों का आज का दिन शानदार रहने वाला है। दिन की शुरुआत में ही शुभ समाचार सुनने को मिलेगा। व्यापार में प्रगति से आपको काफी खुशी होगी। वैवाहिक जीवन भी आपका आज आनन्द दायक गुजरने वाला है। विद्यार्थियों को बौद्धिक और मानसिक बोझ से छुटकारा महसूस होगा। शाम से रात के समय तक पत्नी व बच्चों के साथ आस-पास की यात्रा का योग बन रहा है। घूमने-फिरने के दौरान भी कोई महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती है।

वृष राशि स्वामी शुक्र का षष्ठम भाव में होना और चंद्रमा का मिथुन राशि में गोचर आज आपके जीवन में सुखद अनुभव लेकर आ रहा है। लंबे समय से रुके हुए किसी कार्य के पूरा होने का शुभ समाचार आज सुनने को मिलेगा। कार्यक्षेत्र में मेहनत का फल मिलने से आत्म संतोष का अनुभव होगा। शाम का समय परिवार या प्रियजनों के साथ हंसी-मजाक में बीतेगा, जिससे मानसिक तनाव कम होगा।

मिथुन राशि अधिपति बुध के षष्ठक भाव में होने और चंद्रमा के मिथुन राशि के फलस्वरूप आज आपको हर काम में सफलता प्राप्त होगी। जो भी काम आप करेंगे वह आसानी से पूरा हो जाएगा। इस दौरान आपको व्यर्थ के कार्यों में अपना समय बर्बाद करने से बचना होगा। खर्चों में थोड़ी सी कटौती आपके लिए लाभकारी साबित हो सकती है। जायदाद या किसी अन्य मूल्यवान वस्तु की सौदेबाजी करने से पहले उसके सारे वैधानिक दस्तावेजों का अच्छी तरह अध्ययन कर लें।

कर्क राशि से द्वादश भाव में स्थित गुरु और चंद्रमा आज आपके लिए अत्यंत शुभ संयोग बना रहे हैं। यह योग सर्वत्र विजय, सम्मान और सफलता का प्रतीक है। आर्थिक दृष्टि से भी दिन लाभदायक रहेगा। आपके शत्रुओं का मनोबल गिरेगा। इस दौरान बच्चे खेल कूद में बिजी रहेंगे तो पत्नी हास्य रस में विभोर रहेगी। दूसरों की मदद करने से आपको सुकून मिलेगा। शाम के समय किसी विद्वान व्यक्ति से मिलने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

सिंह राशि वालों के लिए आज का दिन करियर के लिए शुभ संकेत दे रहा है। राशि स्वामी सूर्य का तुला राशि के तृतीय भाव में और चंद्रमा का एकादश भाव में होना आपके भाग्य और सम्मान में वृद्धि का संकेत है। आपको कामकाज में नए अवसर मिल सकते हैं। पुराने दोस्तों से मुलाकात हो सकती है। इस दौरान नई योजनाओं पर बात हो सकती है। परिवार में खुशियों का माहौल रहेगा और कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है।

कन्या राशि के जातक आज किसी प्रिय व्यक्ति के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित रहेंगे। कार्यक्षेत्र में काम का भार भी आज कुछ ज्यादा अनुभव हो सकता है। इस दौरान आपको थोड़ा सोच-समझकर काम करना होगा। अपने जूनियर्स से काम निकालने के लिए प्यार से काम लेना होगा। घर में भी खुशी का वातावरण बना रहेगा। घर की समस्याएं अपने आप हल हो जाएंगी।

तुला राशि वालों के लिए आज के दिन मिलाजुला प्रभाव देखने को मिलेगा। हालांकि इस दौरान किसी भी मामले में फैसला जल्दबाजी में न करें। व्यक्तिगत मतभेदों को व्यावसायिक मामलों के बीच में लाने से आपको नुकसान झेलना पड़ सकता है। प्रेमी या किसी अन्य निकट के व्यक्ति से कोई कहासुनी के आसार दिख रहा हैं। ऐसे में बातचीत से मामले को सुलझाना आपके लिए बेहतर होगा।

वृश्चिक राशि आज के दिन आपकी अपने साथियों के बीच लोकप्रियता बढ़ेगी। किसी राजनयिक से निकटता व दोस्ती होगी। ऐसे में उसके अनुभव का लाभ आपको प्राप्त होगा और भविष्य में फायदा होगा। विद्यार्थियों को सलाह है कि अपना अधिक से अधिक समय अध्ययन में लगाएं। शाम से लेकर रात्रि का समय पाठ पूजा व किसी धार्मिक अनुष्ठान में व्यतीत होगा।

धनु राशि वालों के लिए आज का दिन करियर के लिहाज से अनुकूल रहने वाला है। आपके विरोधी आज आपके आगे टिक नहीं पाएंगे। कार्यक्षेत्र में आपकी स्थिति मजबूत बनेगी। परिवार का सहयोग मिलेगा और राजनीतिक संबंधों से लाभ मिलेगा। हालांकि, आज अपनी वाणी पर संयम रखना आपके लिए जरूरी है। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें और किसी को उधार देने से बचें। शाम के बाद प्रेम संबंधों में निकटता बढ़ेगी। यात्रा के दौरान सतर्क रहें।

मकर राशि के जातकों का आज का दिन बेहद शुभ रहने वाला है। आज आपको कोई उपहार या सम्मान प्राप्त हो सकता है। इस दौरान कोई पुरानी महिला मित्र से अकस्मात् धन लाभ होने से मन प्रसन्न हो जाएगा। रोजगार की दिशा में भी आपको सफलता मिलती हुई दिख रही है। शाम से लेकर रात के समय तक अनचाही यात्रा का योग बन रहा है। ये यात्रा आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगी। प्रियजनों से दिन के खत्म होने तक भेंट भी हो सकती है।

कुंभ राशि का स्वामी शनि उदय हो चुका है। पंचम प्रमुख त्रिकोण में चंद्रमा संतान पक्ष से खुशी और लक्ष्मी की बड़ी मात्रा में प्राप्ति के संकेत दे रहा है। इससे आपके धन में वृद्धि की प्रबल संभावना बन रही है ।आज आपकी उत्कृष्ट कार्यशैली और मृदु व्यवहार आपको विशेष पहचान दिलाएंगे। कार्यक्षेत्र में आपके प्रयासों की सराहना होगी और लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। दूसरों से सहयोग लेने में आप सफल होंगे। हालांकि इस दौरान पास या दूर की यात्रा प्रबल होकर स्थगित हो जाएगी।

मीन राशि स्वामी देव गुरु बृहस्पति के मिथुन राशि में स्थित होने से आज आपका भाग्य प्रबल रहेगा। यह स्थिति आपके जीवन में प्रगति, सम्मान और आत्मविश्वास की वृद्धि का संकेत दे रही है। आज सुबह से ही आपको भागदौड़ करनी पड़ सकती है। आज के दिन आप किसी धार्मिक आयोजन की व्यवस्थाओं में व्यस्त रहेंगे। पिता व उच्चाधिकारियों से शाबासी मिलेगी। वही, शाम से लेकर रात्रि देर तक जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। हालांकि, थकान से थोड़ी परेशानी जरूर हो सकती है।

खूनी नीलम होता है अशुभ, शनि का रत्न नीलम धारण करने से पहले इन बातों का रखें ध्यान

नीलम के रंग संबंधी दोष- नीलम एक वर्णीय अर्थात् नीलम में एक से अधिक रंग नहीं होने चाहिए। नीलम में अन्य रंग के धब्बे एवं लकीर नहीं होने चाहिए। श्याम और रक्तिम आभा युक्त नीलम दोषपूर्ण माना गया है। सामान्य रूप इसे धारण नहीं करना चाहिए। सम्पूर्ण नीलम रत्न में एक समान रंग होना चाहिए। कहीं कम कहीं ज्यादा रंग न हो, जिस नीलम में दो रंग दिखाई दें, वह सन्तान एवं पत्नी के लिए कष्टदायक होता है और शत्रुओं की वृद्धि करता है। यदि नीलम में कहीं हल्का कहीं गहरा रंग हो तो उसे भूलकर भी न खरीदें क्योंकि ऐसा नीलम बुद्धि-विवेक को नष्ट करता है, ऐसे दोषपूर्ण नीलम को धारण नहीं करना चाहिए। बिना चमक का नीलम- जो नीलम कान्तिहीन हो एवं उसमें से रश्मियां ना फूटें, ऐसे नीलम को धारण न करें क्योंकि आभा (चमक) रहित नीलम प्रभावहीन व मित्र-बन्धु नाशक होता है। ऐसा नीलम 'सुन्न' कहलाता है। दूधिया नीलम- जो नीलम दूधिया रंग लिए होता है, वह दरिद्रता कारक एंव कुल की लक्ष्मी का नाशक होता है। ऐसा नीलम अगर मुफ्त में भी मिले तो नहीं लेना चाहिए। जाल एवं गढ्ढेदार नीलम- नीलम खरीदते समय उस पर पड़े जाल एवं गढ्ढों पर भी ध्यान देना चाहिए। जाल जैसे चिन्ह वाला नीलम, धारण

करने वाले को रोगी बनाता है और गढ्ढेदार नीलम शत्रुभय बढ़ाता है। इसी प्रकार चीरा या क्रॉस युक्त नीलम दरिद्रता बढ़ाता है। यदि नीलम में सफेद लाइन या धारी-सी दिखाई पड़े तो ऐसा नीलम शारीरिक पीड़ा व मृत्यु तुल्य कष्ट देता है। खूनी नीलम- नीलम में लाल रंग का बिन्दु, छींट या धब्बा होने पर वह दोषी नीलम, खूनी नीलम कहलाता है। ऐसा नीलम प्राण घातक होता है, हत्या करवाता है या आत्महत्या की ओर प्रेरित करता है। केवल जन्म कुण्डली में एक विशेष योग एवं परिस्थिति में यह नीलम लाखों में से एक व्यक्ति को पहनाया जाता है, अतरू भूलकर भी खूनी नीलम धारण नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार नीलम में अन्य रंगों की छींटें, बिन्दु या धब्बे दोषपूर्ण होते हैं। ऐसा पत्थर चोट-चपेट की आशंका बढ़ाता है, एक्सीडेन्ट आदि करवाता है, इसलिए नीलम खरीदते समय हमेशा ध्यान देना चाहिए और कभी भी चटका, खुरदुरा, कटा, टूटा, घिसा हुआ नीलम नहीं धारण करना चाहिए। शुद्ध नीलम में नीली किरणें निकलती नजर आयेंगी। जो रत्न चिकनाई युक्त, पारदर्शी, साफ, चमकीली नीली किरण लिए हुए एवं सुडौल होता है, वह रत्न शुभ रत्नों मे गिना जाता है, मोर (मयूर) पंख के रंग वाला नीलम सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

मतदाता सूची को लेकर भाजपा कार्यकर्ता बूत लेवल पर सकरी

मतदाता सूची के शुद्धिकरण के लिए भाजपा सारनी मंडल में गहन पुनरीक्षण कार्यशाला संपन्न

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

शुक्रवार को सारनी भाजपा कार्यालय में मतदाता सूची का पून निरीक्षण को लेकर हुए कार्यशाला में बुत अध्यक्षों को मतदाता सूची का वितरण करने का कार्य किया गया। मतदाता सूची में मतदाताओं का नाम अधिक से अधिक संख्या में जुटे इसको लेकर भारतीय जनता पार्टी के माध्यम से किस तरह की सक्रियता दिखाई जा रही है इससे दूसरे पार्टी के कार्यकर्ता और पदाधिकारी को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।भारतीय जनता पार्टी सारनी नगर मंडल कार्यालय में शुक्रवार को मंडल अध्यक्ष गोलू राजपूत की अध्यक्षता में विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान को लेकर मंडल स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।इस कार्यशाला का उद्देश्य आगामी चुनावों के मद्देनजर मतदाता सूची के शुद्धिकरण एवं अद्यतन प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से संचालित करना था। कार्यक्रम में प्रत्येक बूथ के अध्यक्ष,महामंत्रीगण, बी.एल.ए पार्षदगण एवं सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।कार्यक्रम की शुरुआत भाजपा के प्रेरणास्रोत पं.दीनदयाल उपाध्याय जी एवं डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के छायाचित्र पर दीप प्रज्वलन के साथ राष्ट्रगीत वंदे मातरम् का सामूहिक गायन किया।जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने राष्ट्रगीत के गौरवशाली 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और राष्ट्रभक्ति के भाव को स्मरण कराया।उन्होंने कहा कि यह अभियान मात्र एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं बल्कि लोकतंत्र को मज़बूत करने का जन आंदोलन है। हमें सुनिश्चित करना है कि हर पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में सम्मिलित हो और कोई त्रुटि शेष न रहे। उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए नपाध्यक्ष किशोर बरदे ने कहा कि सही और त्रुटिरहित मतदाता सूची ही निष्पक्ष चुनाव की नींव है। कार्यकर्ता बूथ स्तर पर सक्रिय रहकर इस अभियान को सफल बनाएं।मंडल अध्यक्ष गोलू राजपूत ने कार्यशाला का प्रस्तावना रखते हुए कहा कि सारनी मंडल का हर कार्यकर्ता इस अभियान को संगठन के गौरव का विषय बनाएगा,उन्होंने उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत कर टीम भावना और समर्पण की सराहना की है।कार्यशाला का मंच संचालन मंडल महामंत्री विनय मदने ने किया। कार्यक्रम में आए कार्यकर्ता पदाधिकारी का आभार व्यक्त करने का कार्य मीडिया प्रभारी संजीत चौधरी ने व्यक्त किया।

बैतूल में ठंड की दस्तक, पारा 8° गिरा

चार दिन में बढ़ी ठिठुरन, बाजारों में गर्म कपड़ों की मांग तेज

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल जिले में ठंड ने दस्तक दे दी है। पहाड़ों से आ रही बर्फीली हवाओं के कारण तापमान में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है। चार दिनों में बैतूल का न्यूनतम तापमान लगभग 8 डिग्री सेल्सियस नीचे आ गया है। 4 नवंबर को न्यूनतम तापमान 21.2 डिग्री सेल्सियस था, जो 8 नवंबर को घटकर 13 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। शुक्रवार को न्यूनतम तापमान 13.2 डिग्री सेल्सियस और शनिवार को 13.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। रात के तापमान में 3.8 डिग्री सेल्सियस की गिरावट से ठिठुरन बढ़ गई है। ठंड के बढ़ते असर के साथ ही लोगों ने गर्म कपड़े निकालना शुरू कर दिया है। बैतूल का अधिकतम तापमान भी 26.5 डिग्री सेल्सियस पर आ गया है, जिससे दिन में भी सर्दी का एहसास होने लगा है। शाम ढलते ही ठंडी हवाओं का प्रभाव और तेज हो जाता है।

मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि उत्तर भारत में बर्फबारी शुरू होने के बाद इसका असर बैतूल सहित पूरे मध्यप्रदेश में महसूस किया जाएगा। आने वाले दिनों में तापमान में और गिरावट दर्ज होने का अनुमान है।

सर्दी बढ़ने के साथ ही बाजारों में गर्म कपड़ों की दुकानों पर भीड़ बढ़ने लगी है। मुख्य बाजार, गंज क्षेत्र और कोठी बाजार में व्यापारी अपनी दुकानों को आकर्षक रूप से सजा रहे हैं। ऊनी स्वेटर, जैकेट, शॉल और टोपी की बिक्री में तेजी आई है।

दुकानदारों के अनुसार, इस साल नए डिजाइन और फैशन वाले गर्म कपड़ों की मांग अधिक है। महिलाएं शॉल, स्टॉल और स्वेटर की ओर आकर्षित हो रही हैं, जबकि युवाओं में ट्रेंडी जैकेट और हुडी का क्रेज देखा जा रहा है। बच्चों के लिए कार्टून कैरेक्टर वाले ऊनी कपड़ों की विभिन्न वैरायटी भी उपलब्ध कराई गई है।

बैतूल में पिकअप से 10 जीवित, 3 मृत गाय बरामद, तस्करी कर महाराष्ट्र ले जाया जा रहा था, ड्राइवर फरार

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल जिले के आठनेर थाना क्षेत्र में पुलिस ने गौवंश तस्करी का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने एक पिकअप वाहन से 10 जीवित और 3 मृत गौवंश बरामद किए। वाहन का चालक पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया। यह गौवंश महाराष्ट्र के कत्लखाने ले जाए जा रहे थे। पुलिस अधीक्षक बैतूल वीरेंद्र जैन के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी और अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) भैंसदेही भूपेंद्र सिंह मोर्य के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी आठनेर निरीक्षक विजय सिंह ठाकुर की टीम ने कार्रवाई की। 7 नवंबर को विश्वसनीय मुखबिर से सूचना मिलने पर पुलिस टीम हीरादेही फॉरेस्ट बैरियर पर नाकाबंदी के लिए पहुंची।

पुलिस ने वाहन को रोकने का प्रयास किया, लेकिन चालक भाग गया। वाहन की तलाशी लेने पर उसमें 10 जीवित और 3 मृत गौवंश पाए गए, जिन्हें जब्त कर पिकअप वाहन थाने लाया गया। जिसकी अनुमानित कीमत 3 लाख रुपए है। इसके आलावा 10 जीवित गौवंश भी जब्त किए गए, जिनकी कीमत एक लाख आंकी गई है। कुल जब्त संपत्ति का मूल्य चार लाख रुपये है।

फरार चालक के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। इसमें भारतीय दंड संहिता की धारा 325, मध्यप्रदेश गौवंश वध प्रतिषेध अधिनियम की धारा 4, 6, 9, मध्यप्रदेश कृषि उपयोगी पशु संरक्षण अधिनियम की धारा 9, 11 और पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण अधिनियम की धारा 11(1)(घ) शामिल हैं। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

इस कार्रवाई में निरीक्षक विजय सिंह ठाकुर, सउनि संतोष चौधरी, सउनि राज पहाड़े और आरक्षक क्रमांक 226 बीरबल मीणा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बैतूल में चरित्र संदेह में पत्नी की कुल्हाड़ी से हत्या, उम्रकैद की सजा

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल के मुलताई क्षेत्र में पत्नी की कुल्हाड़ी से हत्या के एक जघन्य मामले में न्यायालय ने आरोपी हेमराज को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। माननीय प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश मुलताई द्वारा 7 नवंबर 2025 को सुनाए गए इस फैसले में आरोपी पर 5,000 रुपए का अर्थदंड भी लगाया गया है। आरोपी ने चरित्र संदेह में अपनी पत्नी की हत्या की थी। यह घटना 28 जनवरी 2023 को थाना मुलताई के अंतर्गत ग्राम बडोदे में हुई थी। आरोपी हेमराज ने अपने ही घर में अपनी पत्नी नानीबाई की कुल्हाड़ी से हत्या कर दी थी। मृतका के भाई की रिपोर्ट पर मुलताई थाने में अपराध दर्ज किया गया था। उप निरीक्षक उत्तम मस्तकार ने बताया कि सूचना मिलने पर जब वे पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे, तो आरोपी हेमराज घर का दरवाजा बंद कर अंदर बैठा था।

पुलिस ने दरवाजा तोड़कर उसे हिरासत में लिया। पूछताछ में आरोपी ने हत्या करना कबूल किया, और उसका डीएनए भी पॉजिटिव पाया गया। जांच में यह भी सामने आया कि आरोपी हेमराज ने चरित्र संदेह में अपनी पत्नी की हत्या की थी। जांच में यह भी सामने आया कि आरोपी हेमराज पहले भी अपने पिता की हत्या कर चुका था, हालांकि उस मामले में वह बरी हो गया था। आरोपी घटना के समय से ही जेल में है। यह प्रकरण माननीय प्रथम अपर सत्र न्यायालय मुलताई में (सत्र प्रकरण क्रमांक 10/2023) विचाराधीन था। यह मामला शासन द्वारा चिह्नित जघन्य एवं सनसनीखेज प्रकरणों में शामिल था, जिसकी निगरानी एसपी वीरेंद्र जैन और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा लगातार की जा रही थी।

आमला में किसान कांग्रेस ने मुख्यमंत्री का पुतला जलाया

राज्यपाल के नाम 10 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन सौंपा

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल के आमला में आज (शनिवार) मध्य प्रदेश किसान कांग्रेस ब्लॉक आमला के नेतृत्व में कांग्रेसजनों ने जनपद चौक पर किसानों की समस्याओं को लेकर जोरदार प्रदर्शन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का पुतला दहन किया गया। बाद में राज्यपाल के नाम तहसीलदार को एक ज्ञापन भी सौंपा गया। प्रदर्शन में किसान कांग्रेस, ब्लॉक कांग्रेस, महिला कांग्रेस, यूथ कांग्रेस और सेवा दल सहित विभिन्न कांग्रेस विंग के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शामिल हुए। इस अवसर पर पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागदरे, विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी रहे मनोज मालवी, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष मनोज देशमुख और नगर पालिका अध्यक्ष नितिन गाडरे जैसे प्रमुख नेता भी मौजूद रहे।

किसान कांग्रेस के ब्लॉक अध्यक्ष रविकांत उघड़े और जिला अध्यक्ष जगदीश कोचरे के नेतृत्व में तहसीलदार रिचा कौरव को राज्यपाल के नाम दस सूत्रीय ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में प्रमुख मांगों में पीला मोजैक से खराब हुई सोयाबीन फसलों का तत्काल सर्वे कर मुआवजा और बीमा लाभ देने की मांग की गई। इसके साथ ही मक्का की फसल को समर्थन मूल्य पर खरीदने, अतिवृष्टि से प्रभावित मक्का का मुआवजा देने और रबी फसलों की सिंचाई के लिए 10 घंटे बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने की मांग भी शामिल थी। अन्य मांगों में उद्यानिकी फसलों जैसे आलू, मटर, भिंडी और गोभी को बीमा योजना में शामिल करने की बात कही गई। किसानों ने विपणन समिति आमला से यूरिया खाद की नियमित आपूर्ति शुरू करने और उप मंडी आमला में शीघ्र सब्जी मंडी प्रारंभ करने की भी मांग की। इसके अतिरिक्त, गन्ना खरीदी का मूल्य 400 प्रति क्विंटल करने, 'मां की बगिया' योजना के तहत मजदूरी भुगतान तत्काल किसानों के खातों में डालने, बिजली कर्मचारी दिलीप झरबड़े और सुनील शर्मा के स्थानांतरण को रद्द करने तथा किसानों के खेतों तक पहुंचने वाले मार्गों के निर्माण की स्वीकृति देने की भी अपील की गई। इस दौरान पुलिस प्रशासन मूकदर्शक बना रहा और पुतला दहन के बाद प्रतीकात्मक रूप से पानी डालकर आग बुझाने का प्रयास करता दिखा।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949